सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-42, अंक-07, कुल पृष्ठ-36, चैत्र-वैशाख, विक्रम सम्वत् 2082, अप्रैल, 2025

कुछ स्वयंसेवकों ने सेवा भारती नाम का संगठन खड़ा किया है। ये स्वयंसेवक गरीब और झुग्गी बस्तियों, जिन्हें वे सेवा बस्ती कहते हैं, में सवा लाख से अधिक प्रकल्प चलाते हैं, बिना किसी सरकारी सहायता से। ये लोग केवल समाज का सहयोग लेते हैं और संस्कार, स्वच्छता, शिक्षा जैसे प्रकल्प चलाते हैं।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री (एक अमेरिकी पत्रकार के साथ बातचीत करते हुए)

‘नि:स्वार्थ भाव से सेवाकार्य करना, यही संघ की प्रेरणा है’

संघ के स्वयंसेवक पूरी प्रामाणिकता से, नि:स्वार्थ भाव से, तन-मन-धन से समाज के लिए कार्य करते हैं। आज पूरे देश में डेढ़ लाख से अधिक सेवा प्रकल्पों के माध्यम से संघ समाज में सेवाकार्य कर रहा है। समाज के लिए हर कष्ट उठाकर नि:स्वार्थ भाव से सेवाकार्य करना, यही संघ की प्रेरणा है।

-मोहनराव भागवत

सरसंघचालक

हमारे यहाँ कहा गया है कि हमारा शरीर परोपकार और सेवा के लिए ही है। जब सेवा संस्कार बन जाती है, तो साधना बन जाती है। यही साधना हर स्वयंसेवक की प्राणवायु होती है। यह सेवा संस्कार, यह साधना, यह प्राणवायु, पीढ़ी दर पीढ़ी हर स्वयंसेवक को तप और तपस्या के लिए प्रेरित करती है।

-नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री

शिक्षिका अभ्यास वर्ग

यमुना विहार विभाग में शिक्षिकाओं का विभाग स्तर पर अभ्यास वर्ग हुआ। प्रांत से आए निर्भय शंकर जी, विभाग से विभाग संगठन मंत्री मानवेंद्र जी और विभाग मंत्री गवेंद्र जी रहे। वीना दीदी का विषय 'भजन मंडली की संभाल और हर केंद्र की और बस्ती की भजन मंडली हो' यह रहा। प्रतिभा जी द्वारा अनुशासन का विषय रखा गया। आज के वर्ग में हवन का प्रशिक्षण एक पुराने कार्यकर्ता श्रीमान सुधीर जी और विश्व हिंदू परिषद की एक बहन श्रीमती अनुराधा जी द्वारा दिया गया। हर शिक्षिका को हवन कर के बताया गया कि किस प्रकार से कम समय में सही तरीके से हवन किया जा सकता है और यह सुनिश्चित किया कि हर हफ्ते केंद्र पर हवन हो। अंत में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाओं के साथ शिक्षिकाओं और निरीक्षकाओं को प्रोत्साहन राशि दी गई और जलपान के साथ अभ्यास वर्ग का समापन हुआ। ❒

चिड़ियाघर का भ्रमण

सेवा भारती तिलक जिला द्वारा 19 मार्च 2025 को पढ़ने वाले बच्चों को पिकनिक के लिए चिड़ियाघर ले जाया गया। इसमें तीसरी क्लास से नौवीं क्लास कक्षा तक के 72 बच्चे थे। तिलक नगर, मादीपुर, रघुवीर नगर, सपेरा बस्ती एवं गोपालधाम छात्रावास के बच्चे शामिल थे। बच्चों को पूरा चिड़ियाघर घुमाया गया। बाद में प्रांत सेवा भारती कार्यालय भाई वीर सिंह मार्ग पर लेकर गए। वहां उनके भोजन की व्यवस्था थी। सभी बच्चों ने भ्रमण का पूरा आनंद लिया। अधिकतर बच्चों ने पहली बार चिड़िया घर देखा। कार्यक्रम में सेवा भारती के तिलक जिला के कार्यकर्ता नरेंद्र जी, मंत्री श्री विनोद जी, युवराज जी, प्रवीन गेरा जी, शिक्षिका निशा जी, रेखा जी, प्रभा जी, रोशनी जी, पंकज जी ने बच्चों का पूरा ध्यान रखा। ❒

14 केंद्रों का शुभारंभ

भारतीय नव वर्ष विक्रमी संवत् २०८२ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में किशोरी विकास कार्यक्रम के अंतर्गत 30 मार्च को सेवा भारती पश्चिमी विभाग ने कुल 14 केन्द्रों का शुभारंभ अत्यंत उत्साह के साथ एक ही दिन और एक ही समय पर सम्पन्न किया। सभी कार्यकर्ताओं शिक्षिकाओं और महिला समिति की बहनों का सहयोग सराहनीय रहा। इस कार्यक्रम में किशोरियों का योगदान भी प्रसंशनीय रहा। कार्यक्रम दीप प्रज्वलन, गायत्री मंत्र से प्रारंभ हुआ। सेवा गीत का पाठ और सेवा भारती का परिचय जनमानस को अधिक पसंद आया। किशोरियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस प्रकार का कार्यक्रम नियमित चले, जिससे समाज में नवचेतना का संचार हो। कार्यक्रम के अंत में कल्याण मंत्र के पश्चात् प्रसाद वितरण किया गया। ❒

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय

सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-42, अंक-07, कुल पृष्ठ-36, अप्रैल, 2025

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सेवा भारती करेगी Run for a Girl Child का आयोजन		4
'नि:स्वार्थ भाव से सेवाकार्य करना, यही संघ की प्रेरणा है'	प्रतिनिधि	5
संघ का शुभारम्भ	ना. हा. पालकर	9
भारत माता के पुजारी	प्रतिनिधि	15
अयोध्या धाम में श्रीराम मन्दिर	गंगा प्रसाद सुमन	18
कवयित्री सम्मेलन संपन्न		19
फर्श से अर्श तक की उड़ान	नीरु महाजन	20
हे माँ	विनोद श्रीवास्तव	21
महिला दिवस	भारती बंसल	21
123 के चक्कर में स्वाधीन हुई देश की लाखों संपत्तियाँ	विनोद बंसल	22
एकता में बल		24
समर्थ किशोरी, समग्र विकास		25
155 किशोरी विकास केंद्रों का उद्घाटन	अंजू पांडे	26
सेवाधाम की गतिविधियां		28
होली मंगल मिलन		31
जलाशय निर्माण का फल		34

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

सेवा भारती करेगी Run for a Girl Child का आयोजन

संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करती हुईं श्रीमती निधि आहूजा। साथ में हैं बाएं से श्री रमेश अग्रवाल और श्री सुशील गुप्ता

सेवा भारती दिल्ली द्वारा आगामी 13 अप्रैल को दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में एक मैराथन "Run for a Girl Child" का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन किशोरी विकास और महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से किया जा रहा है। इसमें सेवा बस्तियों की बहनों के साथ बॉलीवुड, व्यवसाय, खेल, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और सशस्त्र बलों से जुड़े प्रतिष्ठित व्यक्तित्व शामिल होंगे।

वर्ष 1979 से संचालित सेवा भारती, स्वास्थ्य, संस्कार, शिक्षा और स्वावलंबन के क्षेत्र में दिल्ली की 1,123 सेवा बस्तियों में अपने सैकड़ों कार्यकर्ताओं के माध्यम से कार्य कर रही है।

इस कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए सेवा भारती के प्रांत अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल ने 2 अप्रैल को एक संवाददाता सम्मेलन में बताया कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के साथ ही, विश्व गुरु बनाना भी बहुत आवश्यक है। इस प्रयास में समाज का हर वर्ग जुड़े, इसके लिए सेवा भारती प्रयासरत है। Run for a Girl Child के माध्यम से हम समाज के वंचित वर्ग और संभ्रांत वर्ग को एक मंच पर लाने का प्रयास कर रहे हैं। जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में समाज का हर वर्ग महिला सशक्तिकरण और किशोरी विकास के उद्देश्य के लिए सम्मिलित होगा।

सेवा भारती की सचिव और कार्यक्रम की संयोजक श्रीमती निधि आहूजा ने बताया कि हम दिल्ली की सभी सेवा बस्तियों, प्रोफेशनल रनर्स और युवाओं को 'टारगेट' कर रहे हैं। इसी के साथ दिल्ली के विभिन्न सेवा भावी व्यवसायियों को भी इस रन में सम्मिलित होने का निमंत्रण भेजा गया है। सेवा भारती दिल्ली, समूचे राज्य की सेवा बस्तियों में 132 किशोरी विकास केंद्रों को भी शुरू कर चुकी है। हमारा उद्देश्य है इन केंद्रों के माध्यम से हम 1 लाख किशोरियों और बेटियों तक सेवाएं पहुंचाना। इस कार्यक्रम के लिए क्रिकेटर श्री वीरेंद्र सहवाग, श्री शिखर धवन, पुलिस कमिश्नर श्री संजय अरोड़ा, श्रीमती पी.टी. उषा ने अभी तक अपना समर्थन दिया है।

सेवा भारती के महासचिव श्री सुशील गुप्ता ने बताया कि सेवा भारती महिला सशक्तिकरण, किशोरी विकास के साथ स्वास्थ्य, शिक्षा और स्वावलंबन के क्षेत्र में दिल्ली में विभिन्न प्रकल्पों को समाज के सुधीजन और सेवाभावी व्यक्तियों के सहयोग से संचालित कर रही है। बालिकाओं के समग्र विकास के लक्ष्य से ये मैराथन आयोजित हो रही है।

रन फॉर गर्ल चाइल्ड का आयोजन जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में सुबह 6 बजे से शुरू होगा। इस दौड़ में 10 किलोमीटर (टाइम्ड रन), 5 किलोमीटर (फन रन), और 3 किलोमीटर (फनरन) जैसी श्रेणियां शामिल हैं। इस आयोजन में हर उम्र के 5,000 से अधिक प्रतिभागियों के भाग लेने की उम्मीद है। ❐

‘नि:स्वार्थ भाव से सेवाकार्य करना, यही संघ की प्रेरणा है’

■ प्रतिनिधि

शिलान्यास समारोह में श्री मोहनराव भागवत और श्री नरेंद्र मोदी के साथ श्री देवेंद्र फडणवीस, स्वामी अवधेशानंद जी महाराज, स्वामी गोविंददेव गिरि जी, श्री नीतिन गडकरी आदि।

गत 30 मार्च को नागपुर में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने माधव नेत्रालय प्रीमियम सेन्टर के नए विस्तारित भवन की आधारशिला रखी। यह आई इन्स्टीट्यूट और रिसर्च सेन्टर का एक नया विस्तार है। यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी की याद में स्थापित किया गया है। इस सेन्टर में 250 बेड का अस्पताल, 14 आउट पेशेंट डिपार्टमेन्ट (ओ.पी.डी.) और 14 आधुनिक ऑपरेशन थिएटर होंगे।

इस समारोह के पूर्व सुबह नागपुर आगमन के पश्चात् प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आद्य सरसंघचालक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार और द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी की समाधि का दर्शन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान सरसंघचालक श्री मोहनरावजी भागवत, पूर्व सरकार्यवाह श्री भैयाजी जोशी, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फडणवीस और केन्द्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी उपस्थित थे। इसके पश्चात् प्रधानमंत्री ने दीक्षाभूमि जाकर डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी के स्मारक के दर्शन किए और उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने अपने सम्बोधन में कहा कि माधव नेत्रालय

माधव नेत्रालय का प्रीमियर सेन्टर आई इन्स्टीट्यूट और रिसर्च सेन्टर का एक नया विस्तार है। यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी की याद में स्थापित किया गया है। इस सेन्टर में 250 बेड का अस्पताल, 14 आउट पेशेंट डिपार्टमेन्ट (ओ.पी.डी.) और 14 आधुनिक ऑपरेशन थिएटर होंगे।

संघ के स्वयंसेवक पूरी प्रामाणिकता से, निःस्वार्थ भाव से, तन-मन-धन से समाज के लिए कार्य करते हैं। आज पूरे देश में डेढ़ लाख से अधिक सेवा प्रकल्पों के माध्यम से संघ समाज में सेवाकार्य कर रहा है। समाज के लिए हर कष्ट उठाकर निःस्वार्थ भाव से सेवाकार्य करना, यही संघ की प्रेरणा है।

-मोहनराव भागवत, सरसंघचालक

है तो दृष्टि की बात स्वाभाविक है। जीवन में दृष्टि ही दिशा देती है। वेदों में भी यह कामना की गई है कि हम 100 तक देखें। यह दृष्टि केवल बाह्य नहीं, बल्कि अन्तर्दृष्टि भी होनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा, "राष्ट्रयज्ञ के इस पावन अनुष्ठान में आने का मुझे सौभाग्य मिला। आज चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का यह दिन बहुत विशेष है। आज से नवरात्रि का पवित्र पर्व शुरू हो रहा है। देश के अलग-अलग कोनों में गुड़ी पड़वा और उगादि का त्योहार मनाया जा रहा है। आज भगवान झूलेलाल और गुरु अंगद देव का अवतरण दिवस भी है। यह हमारे प्रेरणापुंज, परम-पूजनीय डॉक्टर साहब की जयन्ती का भी अवसर है। इसी वर्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गौरवशाली यात्रा के 100 वर्ष भी पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर मुझे स्मृति मन्दिर जाकर पूज्य डॉक्टर साहब और पूज्य श्रीगुरुजी को श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर मिला। इसी कालखण्ड में हमने संविधान के 75 वर्ष पूरे होने का उत्सव मनाया है। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानन्द ने निराशा में डूबे भारतीय समाज को झकझोरा, उसके स्वरूप की याद दिलाई, आत्मविश्वास का संचार किया और राष्ट्रीय चेतना को बुझने नहीं दिया। गुलामी के अन्तिम दशक में डॉक्टरजी और श्रीगुरुजी ने इस चेतना को नई ऊर्जा देने का कार्य किया। राष्ट्रीय चेतना के जिस विचार का बीज 100 वर्ष पहले बोया गया था, वह आज एक महान वटवृक्ष के रूप में खड़ा है। सिद्धान्त और आदर्श इस वटवृक्ष को ऊँचाई देते हैं, जबकि लाखों-करोड़ों स्वयंसेवक इसकी टहनियों के रूप में कार्य कर रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत की अमर संस्कृति का आधुनिक अक्षय वट है, जो निरन्तर भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना को ऊर्जा प्रदान कर रहा है। स्वयंसेवक

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री नरेंद्र मोदी

हमारे यहाँ कहा गया है कि हमारा शरीर परोपकार और सेवा के लिए ही है। जब सेवा संस्कार बन जाती है, तो साधना बन जाती है। यही साधना हर स्वयंसेवक की प्राणवायु होती है। यह सेवा संस्कार, यह साधना, यह प्राणवायु, पीढ़ी दर पीढ़ी हर स्वयंसेवक को तप और तपस्या के लिए प्रेरित करती है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

के लिए सेवा ही जीवन है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि लालकिले से मैंने सबके प्रयास की बात कही थी। आज स्वास्थ्य के क्षेत्र में देश जिस तरह काम कर रहा है, माधव नेत्रालय उन प्रयासों को और आगे बढ़ा रहा है। देश के सभी नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं देना हमारी प्राथमिकता है। गरीब से गरीब व्यक्ति को भी बेहतरीन इलाज मिले, कोई भी देशवासी जीवन जीने की गरिमा से वंचित न रहे। जो बुजुर्ग अपना पूरा जीवन देश के लिए समर्पित कर चुके हैं, उन्हें इलाज की चिंता न सताए, ऐसी परिस्थितियों में उन्हें न जीना पड़े, यही सरकार की नीति है। आयुष्मान भारत योजना के तहत करोड़ों लोगों को मुफ्त इलाज की सुविधा मिल रही है। हजारों जनऔषधि केंद्र देश के गरीब और मध्यम-वर्गीय परिवारों को सस्ती दवाएं उपलब्ध करा रहे हैं। देशभर में सैकड़ों डायलिसिस

सेंटर मुफ्त में डायलिसिस सेवा देकर हजारों करोड़ रुपये की बचत कर रहे हैं। बीते 10 वर्ष में गांवों में लाखों आयुष्मान आरोग्य मंदिर बनाए गए हैं, जहां देश के सर्वश्रेष्ठ डॉक्टरों से टेलीमेडिसिन के जरिए परामर्श, प्राथमिक उपचार और आगे की चिकित्सा सहायता मिल रही है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि हमने न केवल मेडिकल कॉलेजों की संख्या दोगुनी की है, बल्कि एम्स संस्थानों की संख्या भी बढ़ाई है। मेडिकल सीटों की संख्या में भी दोगुनी वृद्धि की गई है, ताकि अधिक से अधिक डॉक्टर उपलब्ध हो सकें। देश के गरीब बच्चे भी डॉक्टर बन सकें, इसके लिए हमने पहली बार मातृभाषा में चिकित्सा शिक्षा उपलब्ध कराई है, जिससे वे भाषा की बाधा के बिना अपने सपने पूरे कर सकें।

प्रधानमंत्री ने बल देकर कहा कि हम देव से देश, राम से राष्ट्र का मंत्र लेकर चल रहे हैं। आधुनिक ज्ञान के साथ-साथ पारम्परिक ज्ञान भी आगे बढ़ रहा है। योग और आयुर्वेद को विश्व में नई पहचान मिली है, जिससे भारत का सम्मान बढ़ रहा है। किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कृति और चेतना के विस्तार पर निर्भर करता है। यदि हम अपने देश के इतिहास पर दृष्टि डालें, तो सैकड़ों वर्षों की गुलामी और आक्रमणों के दौरान भारत की सामाजिक संरचना को मिटाने के लिए क्रूर प्रयास किए गए। लेकिन भारत की चेतना कभी समाप्त नहीं हुई, उसकी लौ जलती रही। कठिन से कठिन दौर में भी इस चेतना को जाग्रत रखने के लिए नए सामाजिक आंदोलन होते रहे। भक्ति आंदोलन इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। मध्यकाल के उस कठिन कालखण्ड में हमारे संतों ने भक्ति के विचारों से राष्ट्रीय चेतना को नई ऊर्जा दी। गुरु नानक देव, संत कबीर, तुलसीदास, सूरदास, संत तुकाराम, संत रामदेव, संत ज्ञानेश्वर जैसे महान संतों ने अपने मौलिक विचारों से समाज में प्राण फूंके। उन्होंने भेदभाव के बंधनों को तोड़कर समाज को एकता के सूत्र में बांधा।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने विदर्भ के महान संत गुलाबराव महाराज को याद करते हुए कहा कि महाराष्ट्र के संत गुलाबराव महाराज को प्रज्ञाचक्षु कहा जाता था। कम आयु में ही उनकी आंखों की रोशनी चली गई थी, फिर भी उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की। कैसे? उनके पास भले ही नेत्र नहीं थे, लेकिन दृष्टि थी, जो बोध से आती है, विवेक से प्रकट होती है और व्यक्ति के साथ-साथ समाज को भी शक्ति देती है। उन्होंने कहा कि संघ भी एक ऐसा संस्कार यज्ञ है, जो अन्तर्दृष्टि और बाह्य दृष्टि दोनों के लिए काम कर रहा है। बाह्य दृष्टि के रूप में माधव नेत्रालय इसका उदाहरण है, जबकि अन्तर्दृष्टि ने संघ को आकार दिया है। हमारे यहाँ कहा गया है कि हमारा शरीर परोपकार और सेवा के लिए ही है। जब सेवा संस्कार बन जाती है, तो साधना बन जाती है। यही साधना हर स्वयंसेवक की प्राणवायु होती है। यह सेवा संस्कार, यह साधना, यह प्राणवायु, पीढ़ी दर पीढ़ी हर स्वयंसेवक को तप और तपस्या के लिए प्रेरित करती है। यह उसे निरन्तर गतिमान रखती है, न थकने देती है, न रुकने देती है। स्वयंसेवक के हृदय में एक भाव हमेशा चलता रहता है। – 'सेवा है अग्नि कुण्ड, समिधा जैसे हम जलें।'

श्रीगुरुजी को श्रद्धाजलि अर्पित करते श्री नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि एक बार एक इन्टरव्यू में श्री गुरुजी ने कहा था कि संघ को प्रकाश का सर्वव्यापी कहा है। प्रकाश अंधेरे को दूर करके दूसरों को रास्ता दिखा देता है। उनकी यह सीख हमारे लिए जीवनमंत्र है। हमें प्रकाश बनकर अंधेरा दूर करना है, बाधाएं हटानी हैं, और रास्ता बनाना है। यही संघ की भावना है। आज भारत की सबसे बड़ी पूंजी हमारा युवा है। हम देख रहे हैं कि भारत का युवा आत्मविश्वास से भरा हुआ है। वह 'इनोवेशन' कर रहा है, 'स्टार्टअप' की दुनिया में परचम लहरा रहा है। अपनी विरासत और संस्कृति पर गर्व करते हुए आगे बढ़ रहा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव जी भागवत ने कहा कि संघ के संस्थापक आद्य सरसंघचालक डॉ. हेडगेवार का जन्म हिन्दू नववर्ष चैत्र शुक्ल वर्ष प्रतिपदा के दिन हुआ था। उस दिन रविवार था। आज ऐसा शुभयोग बना है कि आज रविवार है, वर्ष प्रतिपदा है, डॉ. हेडगेवार की जयन्ती है, चैत्र नवरात्र आज प्रारम्भ हो रहा है और आज ही माधव नेत्रालय के नए प्रीमियर सेन्टर का शिलान्यास भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के हाथों हो रहा है। यह अत्यन्त शुभयोग है। शुभयोग के लिए तपस्या करनी पड़ती है। डॉ. भागवत ने आगे कहा कि गत तीन दशक से माधव नेत्रालय ने अपनी नेत्र चिकित्सा सेवा से समाज में प्रकाश फैलाया है। सामान्य जन के जीवन को अपनी चिकित्सा के माध्यम से आलोकित किया है। इस प्रकल्प में लगे स्वयंसेवकों ने बड़े समर्पित भाव से सेवा की है। हम सभी माधव नेत्रालय की इस तपस्या के साक्षी हैं। तपस्या से पुण्य अर्जित होता है, पुण्य से फल मिलता है। माधव नेत्रालय के पीछे संघ विचार की प्रेरणा है। यह प्रेरणा स्वार्थ की नहीं, भय या प्रतिक्रिया की भी नहीं, न कोई मजबूरी है। वरन शुद्ध सात्विक प्रेम ही अपने कार्य का आधार है। यह समाज मेरा है, समाज के लोग मेरे अपने हैं, यह दृष्टि संघ की शाखाओं मिलती है। इसलिए संघ के स्वयंसेवक पूरी प्रामाणिकता से, नि:स्वार्थ भाव से, तन-मन-धन से समाज के लिए कार्य करते हैं। डॉ. भागवत ने बल देकर कहा कि आज पूरे देश में डेढ़ लाख से अधिक सेवा प्रकल्पों के माध्यम से संघ समाज में सेवाकार्य कर रहा है। समाज के लिए हर कष्ट उठाकर नि:स्वार्थ भाव से सेवाकार्य करना, यही संघ की प्रेरणा है। संघ के स्वयंसेवक प्रतिदिन एक घण्टा शाखा से ऊर्जा प्राप्त करता है और उस ऊर्जा का उपयोग समाज के हित के लिए करता है।

कार्यक्रम में संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री भैयाजी जोशी, श्री सुरेश जी सोनी और सहसरकार्यवाह श्री मुकुंद सीआर उपस्थित थे। ❐

संघ का शुभारम्भ

■ ना. हा. पालकर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 साल पूरे होने वाले हैं। इस निमित्त लोग संघ के बारे में जानना चाहते हैं। इसलिए यहां संघ के प्रचारक रहे श्री ना.हा. पालकर की पुस्तक 'डॉ. हेडगेवार चरित' के एक अध्याय को संक्षिप्त कर प्रकाशित किया जा रहा है।

डॉक्टर जी के मन में संघ की कल्पना निश्चित हो चुकी थी। अब उसे विचार-जगत् से व्यवहार-जगत् में लाना था। उसका सूत्रपात उन्होंने विजयादशमी के शुभ मुहूर्त्त पर करने का तय किया। तद्नुसार 1925 के दशहरे के दिन अपने घर में पन्द्रह-बीस लोगों को इकट्ठा करके उन्होंने सबसे कहा कि "हम लोग आज से संघ शुरू कर रहे हैं।" प्रारम्भ की इस बैठक में श्री भाऊजी कावरे, श्री अण्णा सोहोनी, श्री विश्वनाथराव केलकर, श्री बालाजी हुद्दार, श्री बापूराव भेदी आदि सज्जन उपस्थित थे। संघ के श्रीगणेश की घोषणा करने के उपरान्त डॉक्टर जी ने सबके सामने प्रश्न रखा कि "संघ में प्रत्यक्ष क्या कार्यक्रम किये जायें, जिससे कि हम कह सकें कि संघ शुरू हो गया।" बैठक के अन्त में डॉक्टर जी ने अत्यन्त प्रभावी ढंग से यह स्पष्टीकरण किया कि संघ शुरू करने का अर्थ है कि हम सब शारीरिक, सैनिक तथा राजकीय, तीनों प्रकार की शिक्षा लें तथा दूसरों को देना प्रारम्भ करें।

उस विजयादशमी के दिन तो संघ की दृष्टि से दो ही बातें बीजरूप से निश्चित हुई थीं। पहली, हिन्दू राष्ट्र के पुनरुत्थान की डॉक्टर जी के मन की महत्त्वाकांक्षा तथा दूसरी उसको साकार करने के लिए समर्पित किया हुआ डॉक्टर जी का चारित्र्यपूर्ण, ध्येयनिष्ठ तथा सेवामय जीवन।

प्रारम्भ में संघ के आज के समान प्रतिदिन के कार्यक्रम नहीं थे। संघ के सदस्य से इतनी ही अपेक्षा थी कि वह किसी भी व्यायामशाला में जाकर पर्याप्त व्यायाम करे। रविवार को प्रात: पाँच बजे सबको इतवार दरवाजा प्राथमिक शाला के मैदान में एकत्रित किया जाता था। इस एकत्रीकरण के अवसर पर कुछ दिनों पश्चात् श्री मार्तण्डराव जोग की देखरेख में सैनिक शिक्षण भी प्रारम्भ कर दिया गया था।

संघ के तरुण तथा बाल प्रमुख रूप से श्री अण्णा खोत की 'नागपुर व्यायामशाला' में जाते थे। इसका कारण यह हो सकता है कि प्रथम तो वहाँ व्यायाम की दृष्टि से साधन-सामग्री उत्तम थी तथा दूसरे डॉक्टर जी एवं अण्णा खोत के बीच बड़ी घनिष्ठता थी। डॉक्टर जी के संगठन के सदस्य उस व्यायामशाला में दण्ड, बैठक, मलखम्भ, एकदण्डी, दुदण्डी आदि के कार्यक्रम करते थे। उस समय डॉक्टर जी स्वयं देखरेख के लिए उपस्थित रहते थे।

व्यायाम के अतिरिक्त भी अनेक बातें डॉक्टर जी के सम्मुख थीं। इसलिए संघ में आने वाले तरुणों को स्वतंत्र रूप से शिक्षा देने का विचार शुरू हुआ।

1926 की अप्रैल में रामनवमी के मेले के अवसर पर सभी संघ के सदस्यों को रामटेक ले जाने का विचार डॉक्टर जी के मन में आया। रामटेक में यात्रा के समय भारी भीड़ रहती थी तथा

अनेक यात्रियों को अव्यवस्था के कारण धक्का-मुक्की का कष्ट तो सहना ही पड़ता था उन्हें दर्शन भी ठीक तरह से नहीं मिल पाते थे। डॉक्टर जी ने सोचा कि यह अव्यवस्था संघ के अनुशासित तरुणों के बल पर थोड़ी-बहुत दूर की जा सकी तो संगठन के बल तथा उसकी श्रेष्ठता की एक छाप लोगों के मन पर लग जायेगी। साथ ही इस निमित्त से संघ के सदस्यों का आत्मविश्वास तथा संघनिष्ठा भी कुछ अंशों में बढ़ जायेगी। इस द्विविध हेतु से वे सभी सदस्यों को रामटेक ले जाने के लिए प्रयत्नशील हुए। उन्होंने संघ का नाम निश्चित करने के विषय में अपने सहकारियों के साथ बातचीत प्रारम्भ की तथा दिनांक 17 अप्रैल को अपने घर इस उद्देश्य से बैठक बुलायी। इस बैठक में संघ के नाम के सम्बन्ध में बहुत-से सुझाव आये तथा प्रत्येक ने अपने सुझाव के समर्थन में युक्तियाँ भी दीं। उस काल नागपुर के कार्यवाह ने जो वृत्त लिखा है उसमें वे कहते हैं, "सभा में छब्बीस सदस्य उपस्थित थे। सभा के सम्मुख तीन नाम रखे गए- एक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, दूसरा, जरीपटका मण्डल और तीसरा, भारतोद्धारक मण्डल। इनमें 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' नाम स्वीकृत हुआ।'' संस्था का नामकरण हो जाने के उपरान्त सभी घटकों को विशिष्ट वेष बनवाने का डॉक्टर जी ने आग्रह किया तथा अधिकांश लोग रामनवमी के मेले पर रामटेक में उसी वेश में उपस्थित रहे। प्रारम्भ में संघ ने उसी वेश को स्वीकार किया जो कि कांग्रेस अधिवेशन के समय डॉ. परांजपे तथा डॉ. हेडगेवार के नेतृत्व में बनाये गये 'भारत सेवक समाज' के स्वयंसेवकों का था। उसमें खाकी निकर, खाकी कमीज तथा दो बटनों की खाकी टोपी अन्तर्भाव होता था। खाकी निकर की लम्बाई उस समय घुटने तक होती थी।

19 अप्रैल को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अनाथ विद्यार्थी, गृह तथा बजरंग संघ की एक संयुक्त बैठक हुई तथा उसमें रामटेक जाने की योजना बनायी गयी। रामटेक के उस मेले में रामनवमी के एक दिन पहले ही सब स्वयंसेवक वहाँ पहुँच गये। हजारों दर्शनार्थियों की भीड़ उमड़ने पर पुलिसवाले उनकी कोई व्यवस्था नहीं कर पाते थे। संघ के स्वयंसेवकों तथा उनके सहकारियों ने प्रवेशद्वार के पास खड़े रहकर लोगों को प्रार्थनापूर्वक लाइन में खड़ा कर दिया तथा बारी-बारी से दर्शनों के लिए जाने की व्यवस्था कर दी। उन्होंने स्थान-स्थान पर पानी भरकर यात्रियों के लिए प्याऊ की भी व्यवस्था की। इस समय एक और बात ध्यान में आयी कि भावुक हिन्दुओं के अज्ञान का लाभ उठाने की दृष्टि से मुसलमान फकीर नगारखाने तक छोटी-छोटी कब्रें बनाकर पीरों के नाम पर भोले-भाले यात्रियों से पैसा ऐंठते

रहते थे। भोले-भाले लोगों को इन झूठे पीरों के आक्रमण का कुछ भी ज्ञान नहीं था तथा जिनको वह खटकता था, उन्हें उसको रोकने का साहस नहीं होता था। डॉक्टर जी ने अपने सहकारी तथा रामटेक के अपने मित्रों की सहायता से इन पीरों का उच्चाटन कर दिया। प्रातः आठ से सायं पाँच बजे तक स्वयंसेवकों ने वहाँ काम किया। फिर रात्रि को भोजन के उपरान्त विश्राम किया। संघ के प्रारम्भ से ही हाथ में लिया गया यह कार्यक्रम बहुत वर्षों तक चलता रहा तथा अधिकाधिक

संख्या में स्वयंसेवक वहाँ जाते रहे।

रामटेक का कार्यक्रम समाप्त होने के बाद संघ में श्री सोहोनी के नेतृत्व में लाठी-शिक्षण का कार्य पहले के समान ही आरम्भ हो गया। इस आकर्षण के कारण नये-नये तरुण संघ में आने लगे। संख्या के इस प्रकार बढ़ने पर डॉक्टर जी ने नये-नये घटकों को भी धीरे-धीरे संघ की विचारधारा से अवगत कराना प्रारम्भ किया। चाहे जिस तरुण को एकदम संघ में प्रवेश नहीं मिलता था। यदि कोई तरुण संघ में प्रवेश लेना चाहता था, तो संघ के दो पुराने स्वयंसेवकों को यह प्रमाणित करना पड़ता था कि उनका उससे अच्छा सम्बन्ध है। तब डॉक्टर जी दो-तीन बार उसको बुलाकर उससे बातचीत करते थे। यह बातचीत बड़े सहज भाव से तथा आजादी के साथ होती थी; परन्तु डॉक्टर जी का ध्यान आने वाले स्वयंसेवक के स्वभाव, वृत्ति तथा गुणों के परखने की ओर रहता था। इस प्रकार की प्राथमिक पृच्छा के बाद डॉक्टर जी उससे भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रश्न पूछते थे। डॉक्टर जी का व्यक्तित्व कुछ ऐसा था कि एक बार उनसे जो मिल गया फिर उसके पैर अपने आप उनके घर की ओर ही बढ़ जाते थे। उनके शब्द ओठ से नहीं, हृदय से निकलते थे। उनसे मिलकर वापस जाने वाले को वे जीने तक पहुँचाने आते थे तथा उसके कन्धे पर हाथ रखकर अपने प्रसन्न हास्य की उसके ऊपर आनन्दमयी वर्षा करते हुए पूछते थे कि "फिर कब आओगे?" इस प्रश्न से घर की ओर मुड़े हुए पैर भी कुछ देर रुक गये हैं, यही अनुभव होता था।

नये-नये स्वयंसेवकों की भर्ती के कारण 'इतवार दरवाजा प्राथमिक शाला' का आँगन छोटा पड़ने लगा। अतः नये स्थान की खोज प्रारम्भ हुई। डॉ. खानखोजे, श्री भाऊजी कावरे तथा डॉक्टर जी ने 1908-9 से लगाकर जिस मोहिते के बाड़े का अपने क्रान्तिकारी गुप्त कामों के लिए उपयोग किया था, उस ओर उनकी दृष्टि गयी; किन्तु 1908 की तुलना में 1926 में बाड़े में बहुत टूट-फूट हो चुकी थी। डॉ. खानखोजे ने 1908 में बाड़े का वर्णन इन शब्दों में किया है, "यह एक छोटा-सा किला ही था। उस समय वृद्ध सालूबाई अकेली सरदारी ठाट-बाट के साथ उसमें रहती थीं। उनमें पुराने मराठों का देशाभिमान बहुत मात्रा में जाग्रत था। बाड़े के विशाल पत्थरवाले दरवाजे पर एक सिपाही रात-दिन पहरा देता रहता था। बिना अनुमति के कोई अन्दर नहीं जा सकता था। बाड़ा दुमंजिला था तथा अन्दर बड़े-बड़े दालान थे।" पर 1926 में इस बाड़े की कुछ दीवारें तथा कुर्सी ही बची थी। सालूबाई के बाद बाड़े का कोई वारिस नहीं बचा, अतः उसकी दुर्दशा होना स्वाभाविक ही था। इस खंडहर का उपयोग डॉ. परांजपे तथा डॉ. हेडगेवार ने 1920 में कांग्रेस- अधिवेशन के समय भी किया था; परन्तु उस समय जैसे-तैसे जो भाग काम में आ सका था वह भी अब ढह गया था। फिर भी उस स्थान की साफ-सफाई कराने तथा वहाँ संघ स्थान बनाने का विचार हुआ। संघ स्थान के लिए जगह निश्चित करने के उपरान्त आजकल खड़े पत्थरवाले दरवाजे के पूर्व की ओर कुछ भाग साफ किया गया। यह काम संघ लगने के पूर्व तथा छुट्टी के दिन अन्य समय भी होता था। कुदाल, फावड़ा तथा तसला लेकर डॉक्टर जी स्वयं अन्य तरुण स्वयंसेवकों के साथ गिरी पड़ी भीतों के मलबे को साफ करने में जुटते थे।

संघ में नियमित रूप से लाठी की शिक्षा 28 मई, 1926 से आरम्भ हुई। उसके लिए धीरे-धीरे नयी आज्ञाएँ बनाने की आवश्यकता हुई। श्री अण्णा सोहोनी ने यह काम बड़ी सफलता के साथ कर दिखाया। अंग्रेजी की आज्ञाएँ सामान्यतः प्रचलित होते हुए भी उन्हें स्वीकार न करते हुए आग्रहपूर्वक स्वभाषा में आज्ञाएँ बनायी गयीं। इनके बनाने में मराठी, हिन्दी तथा संस्कृत सभी भाषाओं का आधार लिया गया था।

इन शारीरिक कार्यक्रमों के अन्त में प्रार्थना शुरू की गयी। उसमें एक मराठी तथा एक हिन्दी का पद था।

उन दिनों प्रत्येक मास के प्रथम रविवार को बैठक होती थी, जिसमें पिछले मास का प्रतिवेदन सबके सम्मुख रखा जाता था। उसी समय अगले महीने भर के कार्यक्रम भी निश्चित होते थे। उन दिनों यह नियम था कि प्रत्येक स्वयंसेवक महीने में कम-से-कम एक-दो बार तो डॉक्टर जी से अवश्य ही मिले। इस समय डॉक्टर जी तथा

अन्य अधिकारी आग्रहपूर्वक इस बात की पूछताछ करते थे कि स्वयंसेवक व्यायामशाला में जाता है या नहीं।

डॉक्टर जी ने रक्षाबन्धन का उत्सव भी संघ में मनाया। इस उत्सव पर साधारणतया बहन के द्वारा भाई को तथा ब्राह्मण के द्वारा शेष समाज को राखी बाँधने की पद्धति प्रचलित थी। उसके पीछे बहन और ब्राह्मण की रक्षा करने का अभिवचन अभिप्रेत है। डॉक्टर जी ने इसे राष्ट्र की तथा बन्धुत्व के आधार पर परस्पर की रक्षा करने का निश्चय प्रकट करनेवाले त्योहार का रूप देकर राष्ट्रीयता की संस्कार - निर्मिति का महत्त्वपूर्ण साधन बनाया। पहला रक्षाबन्धन-उत्सव तुलसीबाग में दिन के दो बजे बैठक के रूप में मनाया गया।

मस्जिद के सामने बाजा बजाते हुए निकलने के अधिकार को अबाधित रखने की दृष्टि से संघ के प्रारम्भिक दिनों में स्वयंसेवक डॉक्टर जी की प्रेरणा से इस प्रकार के जुलूसों में भाग लेते थे। 1925 के प्रारम्भ में नागपुर में हिन्दू-मुसलमानों के झगड़ों का फैसला करने के लिए पं. मोतीलाल नेहरू, डॉ. महमूद तथा मौलाना अबुलकलाम आजाद की एक जाँच समिति बैठी थी। उस समिति ने निर्णय दिया था कि भोंसले घराने की तथा जागोबा की कोई भी शोभायात्रा मस्जिद के सामने से कभी भी बाजा बजाते हुए निकल सकती है तथा अन्य शोभायात्राएँ शहर की पाँच प्रमुख मस्जिदों के सामने दोपहर तथा सायंकाल की नमाज के समय आधा-आधा घण्टा छोड़कर अन्य समय बाजे के साथ निकल सकती है; किन्तु यह निर्णय कागज पर ही रह गया था। मुसलमानों की हठधर्मी तथा हिन्दुओं की भीरुता ही इसके लिए कारण थी। इस स्थिति को देखकर डॉक्टर जी का विचार था कि मुसलमानों ने जैसे ही 'बाजा बन्द करो' कहा वैसे ही उससे भी कड़कती आवाज के साथ 'बाजा बजाओ' कहनेवाले साहसी हिन्दू हर शोभायात्रा के साथ होने चाहिए। जैसी कि अपेक्षा थी स्वयंसेवकों के इन शोभायात्राओं में भाग लेने के कारण वे निर्विघ्न रूप से निकलने लगीं। कुछ दिनों के बाद तो संघ जैसे-जैसे बढ़ने लगा वैसे-वैसे मुसलमानों का हठ कम होकर उनमें भी समझदारी दिखने लगी। वैसे इस काल में तथा उसके बाद दो-तीन वर्ष तक नागपुर में हिन्दू-मुसलमानों के आपसी सम्बन्ध खिंचे हुए ही थे। उन दिनों हरितालिका के अवसर पर मुसलमानों के द्वारा महिलाओं को छेड़ने का प्रयत्न होने के कारण तुलसीबाग, शुक्रवार तालाब तथा उस ओर जानेवाले मार्गों में सभी प्रमुख स्थानों पर संघ के स्वयंसेवक योजनापूर्वक खड़े रहते थे। यह जागरूकता परिणामकारक हुई तथा माताएँ बिना किसी कठिनाई से उस पर्व को मना सकीं। नि:सन्देह उन्होंने डॉक्टर जी तथा संघ के स्वयंसेवकों को अत्यन्त सन्तोषपूर्वक आशीर्वाद दिया होगा। संघ का पहला वार्षिकोत्सव डॉक्टर जी के घर में ही मनाया गया।

यह उत्सव सायं चार बजे सम्पन्न कर सभी स्वयंसेवक राजाबाक्षा के प्रसिद्ध हनुमान-मन्दिर में सीमोल्लंघन के निमित्त गये।

खेलने के लिए मोहिते बाड़े की काफी जगह साफ कर ली गयी थी। उस स्थान तलघर में बैठकों के निमित्त तथा अन्य समय भी स्वयंसेवकों का आना-जाना चलता रहता था। अब संचलन के लिए पर्याप्त स्थान हो जाने के कारण डॉक्टर जी ने श्री मार्तण्डराव जोग को प्रत्येक रविवार को प्रात: काल सैनिक शिक्षण देने की सूचना दी। यह दिसम्बर, 1923 की घटना है। श्री मार्तण डराव जोग उस समय कांग्रेस दल के

भी प्रमुख थे। डॉक्टर हेडगेवार तथा श्री मार्तण्डराव जोग के घर नयी शुक्रवारी में पास-पास ही थे। श्री जोग 1920 में सेना से लौटकर आये थे। डॉक्टर जी से उनका परिचय होने के बाद शनै:-शनै: वह घनिष्ठ होता गया।

मोहिते संघ स्थान पर संचलन का कार्यक्रम प्रारम्भ होने के बाद डॉक्टर जी ने गणवेश का आग्रह भी शुरू कर दिया। कभी-कभी रास्ते से भी संचलन करते हुए स्वयंसेवकों को ले जाते थे। पहले संचलन में गणवेशधारी तीस स्वयंसेवकों को अनुशासनबद्ध तरीके से सीटी की आवाज पर चलते देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ तथा कुछ बाल और किशोर तो इन स्वयंसेवकों के पीछे इकट्ठे होकर उन्हीं के समान पैर मिलाकर चलने का अनुकरण करते हुए तेलंगखेडी तक गये। इस प्रथम संचलन का परिणाम शाखा की संख्या-वृद्धि में हुआ कोई आश्चर्य की घटना नहीं। यह राष्ट्र की दृष्टि से महत्त्व की बात थी। ग्वालियर के एक सैनिक अधिकारी श्री उपासनी जब छुट्टियों में नागपुर आते तो डॉक्टर जी सैनिक शिक्षण में स्वयंसेवकों को निपुण बनाने की दृष्टि से कुछ स्वयंसेवकों को उनके पास शिक्षा लेने के लिए भेजते। श्री उपासनी ने दियासलाई की तीलियों के सहारे अपने कमरे में ही श्री कृष्णराव लाम्बे आदि तरुणों को विविध पथक-रचनाओं तथा व्यूह-रचना का शिक्षण दिया। प्रारम्भ में इतने शिक्षण का भी शाखा के लिए बहुत उपयोग हुआ। इस प्रकार कण-कण से संगठन का निर्माण हो रहा था।

उन दिनों नागपुर में श्रीमन्त बुटी के यहाँ गोकुलाष्टमी के अवसर पर उनके बर्डी स्थित निवास पर सात दिन का मुक्त-द्वार ब्राह्मण भोजन होता था। उसमें महाल से संघ के कुछ तरुण स्वयंसेवकों ने जाने की तैयारी की। इस काम में चार मील पैर पटकते जाना-आना तथा लगभग तीन घण्टे समय खर्च करना पड़ता था; परन्तु यह सब कुछ सहन करने को वे सानन्द तैयार थे, क्योंकि उनके सामने लोभ था कि वहाँ मिली दक्षिणा के पैसों से संघ की निधि में वृद्धि हो सकेगी और एक बिगुल खरीदा जा सकेगा। इस कार्यक्रम में भाग लेने वालों में श्री बाबासाहब आपटे, श्री दादाराव परमार्थ, श्री बालासाहब देवरस, श्री कृष्णराव मोहरीर आदि सभी लोग थे। जो भी हो, संघ का पहला बिगुल खरीद लिया गया तथा जब प्रथम बार उसको स्वयंसेवकों ने बजाया तो उनके आनन्द की सीमा नहीं रही। उसका चारों ओर गूँजनेवाला स्वर संघ के स्वयंसेवकों के त्याग, लगन और अध्यवसाय तथा संघकार्य की प्रगति की घोषणा करता हुआ मानो राष्ट्र के पुरुषार्थ को झकझोर कर जगा रहा था।

डॉक्टर जी को हिन्दू समाज में 'वीरव्रतधारी' तरुण खड़े करने की आवश्यकता प्रतीत होती थी। अत: सैनिक संचलन के साथ स्थान-स्थान पर शाखाओं में छोटा-सा घुड़सवार दल बनाने की भी योजना हुई। किसी शाखा के पास गुरुदक्षिणा के पैसे पड़े रहना उन्हें अच्छा नहीं लगता था! उनका बराबर कहना था कि उन पैसों का उपयोग आवश्यक गुणों के विकास तथा कार्य की वृद्धि के लिए करना चाहिए।

डॉक्टर जी की घर की स्थिति उस समय अच्छी नहीं थी। अपने बड़े भाई की पुरोहिताई के बल पर ही ज्यों-त्यों करके परिवार का निर्वाह हो रहा था। डॉक्टर जी ने घर के नीचे पूर्व की ओर का भाग किराये में देकर आय-व्यय सन्तुलित करने का कुछ प्रयत्न किया; किन्तु डॉक्टर जी के यहाँ प्रात:काल से लेकर रात्रि ग्यारह-बारह बजे तक लोगों को अखण्ड आना-जाना तथा उसमें अनेक का चाय के द्वारा आतिथ्य चलता रहता था, फिर भला हाथ की तंगी कैसे दूर हो सकती थी। डॉक्टर जी का भाव था कि अपने लिए दूसरों को कष्ट न उठाना पड़े तथा जो दु:ख अपने भाग है उसे स्वयं ही चुपचाप सहन करते रहें। डॉक्टर जी का सम्पूर्ण समय सामाजिक कार्यों में व्यतीत होने के कारण उनका वैयक्तिक जीवन आर्थिक दृष्टि से कष्टमय है, यह भी उन्हें पता लग गया था; किन्तु मित्र के नाते उनकी आर्थिक सहायता करने का प्रस्ताव उनके सम्मुख रखने में राजा लक्ष्मणराव भोंसले को भी संकोच होता था। उन्होंने अपने व्यवस्थापक श्री वासुदेव शास्त्री संगमकर के द्वारा कई बार डॉक्टर जी के कान में यह बात डलवायी कि राजा साहब का विचार आपको कुछ जमीन देने का है। पर जब भी यह विषय निकलता, डॉक्टर जी सुनी-अनुसनी करके झट से विषय बदल देते। एक बार संगमकर ने अत्यन्त आग्रह किया। इस पर वे जरा गरम हो गये और बोले, "यह विषय फिर निकालोगे तो आपके पास आज से आना ही बन्द। मेरी सम्पत्ति तो संघ ही है।" इस घटना के बाद संगमकर ने वह विषय छोड़ दिया तथा राजा लक्ष्मण राव को भी यह बात बता दी।

सिन्दी के श्रीमन्त नानासाहब टालाटुले डॉक्टर जी के क्रान्तिकाल से अत्यन्त घनिष्ठ मित्र एवं अनुयायी थे। उनकी डॉक्टर जी पर असीम श्रद्धा थी।

1922-23 से तो उन्होंने नियम ही बना रखा था कि वर्ष में एक-दो बार डॉक्टर जी विश्राम के लिए उनके यहाँ आयें। एकाध बार डॉक्टर जी सिन्दी जाने के लिए आजकल करने लगे कि टालाटुले नागपुर में उनके यहाँ धरना देकर ही बैठ जाते थे। डॉक्टर जी के विश्राम के लिए जाने पर वर्धा से आप्पा जी जोशी भी वहाँ आ जाते थे। 1926 में एक बार तीनों बैठे थे कि नानासाहब तथा आप्पाजी ने बात-ही-बात में विषय निकाला और बोले "सतत सार्वजनिक कामों में लगे रहने के कारण आपको घर की ओर ध्यान देने का अवकाश नहीं मिलता और इसके कारण आर्थिक चिन्ता आपके पीछे सदैव छाया की भाँति लगी रहती है। इसमें से कोई रास्ता निकालना चाहिए।" पर डॉक्टर जी ने सुनी-अनसुनी कर दी। फिर भी दोनों ने बात समाप्त नहीं की। इस पर डॉक्टर जी बोले "मुझे आवश्यकता होगी तो मैं माँग लूँगा।'' डॉक्टर जी के उपर्युक्त कथन का आधार लेकर श्री नानासाहब टालाटुले, आर्वी के श्री नारायणराव देशपाण्डे तथा श्री आप्पा जी जोशी ने डॉक्टर जी की भाभी जी के पास चुपचाप प्रति महीने पचास रुपये देना शुरू कर दिया। इसके कारण घर में कुछ सुधरा हुआ रंग-ढंग देखकर डॉक्टर जी के मन में संशय आ गया। उन्होंने चुतराई के साथ भाभी जी से वास्तविकता का पता लगा लिया और तीनों की दोबारा भेंट होने पर उनसे कहा, "आप लोगों ने मेरे कथन का खूब अर्थ लगा लिया। मुझे जब सच में जरूरत होगी मैं नि:संकोच भाव से माँग लूँगा। आगे ऐसा मत करिये।'' मित्रों का यह दाँव भी दो-तीन महीने में खाली गया। डॉक्टर जी ने यद्यपि यह बताया था कि आवश्यकता नहीं है; किन्तु उनकी स्थिति को जो निकट से देखते थे वे मन में बेचैन हुए बिना नहीं रह सकते थे। कभी उनके पास कपड़ों के लिए पैसा नहीं था तो कभी मँहगाई के कारण दाल-भात पर ही अधपेट रह जाना पड़ता था। इस स्थिति में भी वे अपने यहाँ आये हुए मेहमानों को आग्रहपूर्वक अपने साथ भोजन के लिए बैठा लेते थे तथा बासी भाकरी एवं मिर्च-तेल की चटनी का स्वाद उनके मित्रों को भी मिल जाता था। डॉक्टर जी कभी यह ख्याल नहीं करते थे कि उनकी पत्तल में क्या परोसा जा रहा है। भोजन करते समय वे मित्रों के साथ देश तथा संघ के विषय में बातचीत में इतने रम जाते थे तथा दूसरों को भी हास्य-विनोद में इतना बेसुध कर देते थे कि 'हाँ-हूँ' करते मित्रों का ध्यान भी डॉक्टर जी के दारिद्रय की ओर नहीं जा पाता था।

इन्हीं दिनों डॉक्टर जी के कुछ मित्रों ने 'आइडियल डेमोक्रेटिक इंश्योरेन्स कम्पनी' शुरू की तथा उसके वैद्यकीय विभाग के प्रमुख के नाते डॉक्टर जी की नियुक्ति कर दी। न्यायमूर्त्ति भवानीशंकर नियोगी, डॉ. परांजपे, श्री गोपालराव देव तथा श्री नानासाहब तेलंग आदि सज्जनों के मन में डॉक्टर जी के लिए जो प्रेम था वही इस योजना के द्वारा प्रकट हुआ था। इस नियुक्ति के कारण डॉक्टर जी को वर्ष में चार-पाँच सौ रुपये मिल जाते थे। 1926 से 1935-36 तक यह क्रम चलता रहा। इसके कारण डॉक्टर जी की हाथ की तंगी कुछ कम हो गयी।

नागपुर के बाहर संघ सबसे पहले वर्धा पहुँचा। जिसका केन्द्र नागपुर में था ऐसे संघ-वृक्ष की यह पहली शाखा थी। संघ की कल्पना से लेकर संघ शाखा के रूप में उस कल्पना को मूर्त स्वरूप देने तक सब काम डॉक्टर जी ने ही किया; परन्तु उनका स्वभाव ऐसा था कि उसमें कहीं भी 'मैं'-पन का भाव नहीं दिखाई देता था। 'हम लोग संघ शुरू कर रहे हैं' अथवा 'हम लोगों के द्वारा शुरू किया गया संघ' आदि वाक्य प्रयोग के द्वारा वे सदैव सबका अन्तर्भाव करके ही कार्य का उल्लेख करते थे; किन्तु कार्य की दृष्टि से कोई-न-कोई विधान तथा अधिकार श्रेणी निर्माण करना अपरिहार्य आवश्यकता होती है। अत: 19 दिसम्बर, 1926 की बैठक में इसका विचार हुआ तथा डॉक्टर जी को औपचारिक रूप से प्रमुख चुना गया। उस समय की प्रतिवेदन-पुस्तिका में लिखा है, 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को नियमपूर्वक, सुचारू रूप से तथा अनुशासनपूर्ण ढंग से चलाने के लिए एक ही सत्ताधारी व्यक्ति का होना बहुत आवश्यक है। ऐसा होने से संगठन में होने वाले घोटाले कम होते हैं। अत: आज सभा के मत से एक सत्ताधारी व्यक्ति नियुक्त करना जरूरी है और वह सत्ताधारी मनुष्य आज हम सर्वानुमति से डॉक्टर हेडगेवार को नियुक्त करते हैं।'

इस प्रकार डेढ़ वर्ष की खटपट के बाद नागपुर तथा वर्धा में संघ चला और हिन्दुस्थान के सैकड़ों वर्षो के इतिहास में जिस समष्टि-जीवन का अभाव बुरी तरह खटक रहा था उसे दूर करने वाला तंत्र सिद्ध हो गया। मोहिते बाड़े के ध्वंसावशेष के बीच राष्ट्र के पुनर्निर्माण के प्रयत्न प्रारम्भ हो गये। विध्वंस में भी सृजन का सामर्थ्य रखने वाले राष्ट्र का चैतन्य जाग उठा था। बाड़े के पास रास्ता चलने वालों को अब रोज सायंकाल परमपवित्र भगवाध्वज फहराता हुआ दिखता। ❐

भारत माता के पुजारी

■ प्रतिनिधि

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म 1 अप्रैल, 1889 को नागपुर में प्रतिपदा के दिन हुआ था। वर्ष प्रतिपदा को महाराष्ट्र में 'गुड़ीपड़वा' के नाम से जाना जाता है। 'यह दिन हिंदू मन, हृदय और विवेक को भारत के इतिहास के घटनाचक्र, राष्ट्र की अस्मिता, सांस्कृतिक परंपराओं एवं वीर तथा वैभवशाली पूर्वजों की विरासत का यशस्वी बोध कराता है।'

डॉक्टर साहब स्वभाव से अजातशत्रु थे। उनके विरोधी भी उनके चरित्र पर कोई छींटाकशी नहीं कर सकते थे। उनका इस बात पर बड़ा जोर रहता था कि कार्यकर्ता का चरित्र बिल्कुल साफ होना चाहिए। चरित्र के बारे में उन्होंने कभी भी ढिलाई नहीं बरती। व्यक्तियों में राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण उनके जीवन का पहला काम था, किंतु मनुष्य इसकी सीख किसी के बोलने भर से नहीं बल्कि उसके स्वयं चरित्र को देखकर लेता है। इसके लिए डॉक्टर साहब का चलता फिरता उदाहरण स्वयंसेवकों के सामने रहता था। उनके नेतृत्व की विशेषता यह थी कि जितने उनके पास जाओ उतने ही वे महान लगते थे, इससे उनका आकर्षण बढ़ता जाता था। एक मोहक मधुरता उनके साथ रहने में थी। साथ ही उनमें न तो बड़प्पन की भावना थी और न ही अनावश्यक शिष्टाचार।

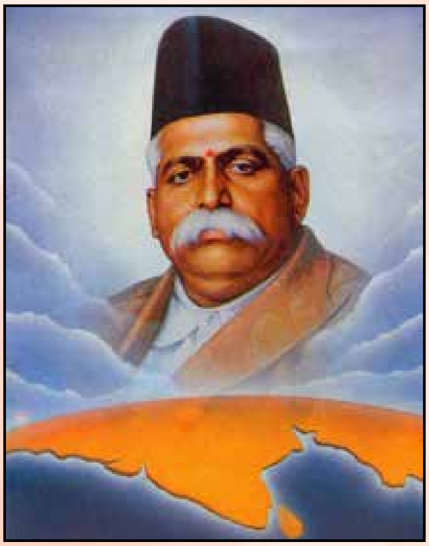

डॉक्टर जी की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता थी हिन्दू धर्म संस्कृति में दृढ़-मूल उनका स्वयं प्रतिभत्व। संघ की कार्यपद्धति में इसका दर्शन हमें होता है। यह कार्यपद्धति न किसी पश्चिमी कार्यपद्धति की नकल है, न किसी भारतीय संस्था तथा दल की कार्यपद्धति की।

आचार्य अत्रे डॉक्टर साहब के स्वभाव के गुणों को बताते हुए एक प्रसंग का जिक्र करते हैं जिसमें वह बताते हैं कि डॉक्टर साहब जैसे नेता उनके घर आने वाले हैं, इस बात का पहले उनके मन पर बड़ा दबाव था। पर जब वे सामने आए तो उनका बोलना, चलना देखकर वह दबाव एकदम दूर हो गया और ऐसा लगा जैसे परिवार के ही कोई बड़े व्यक्ति घर में घूम रहे हैं। अपनी सादगी, प्रसन्नता, स्नेहशीलता और सहज रूप से घुलमिल जाने की आदत के कारण डॉक्टर साहब कहीं भी अनचाहे नहीं हुए। डॉ साहब स्वयंसेवकों में भी यही गुण देखना चाहते थे।

डॉ. हेडगेवार : देशभक्ति जीवन का स्वर

डॉक्टर हेडगेवार जी के जीवन में बचपन से ही हमेशा कर्म के रूप में देशभक्ति का भाव बिना किसी समय छूटे बना रहा, जिससे उनका जीवन हमेशा प्रकाशित होता रहा। जब वे नागपुर के नील सिटी हाई स्कूल में पढ़ रहे थे तब अंग्रेज सरकार ने बदनाम रिस्ले सर्क्युलर जारी किया। इस आदेश के द्वारा अंग्रेज सरकार विद्यार्थियों को स्वतंत्रता आंदोलन से दूर रखना चाहती थी। नेतृत्व का गुण केशवराव में विद्यार्थी जीवन से ही था। विद्यालय की जांच के दौरान डॉक्टर हेडगेवार ने हर एक कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा जांच करने वालों का स्वागत वंदे मातरम से करवाया। विद्यालय में खलबली मच गई, मामला फैल गया और अंत में सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालय से उन्हें निकाल दिया गया। फिर यवतमाल की राष्ट्रीय शाला में उन्होंने मैट्रिक की पढ़ाई की किंतु परीक्षा देने से पहले ही वह विद्यालय भी अंग्रेज सरकार द्वारा बंद कर दिया गया। अब परीक्षा देने उन्हें अमरावती जाना पड़ा। जब कोई राष्ट्र गुलाम होता है तब देशभक्ति की भावना रखने वाले हृदय बहुत ही भावुक हो जाते हैं।

केशव निडर और साहसी थे तथा देश के लिए किसी भी प्रकार का त्याग करने के लिए तैयार थे। अपने लिए पैसा, सम्मान, ख्याति और आराम आदि किसी बात की इच्छा उनके मन में कभी पैदा नहीं हुई। उन्होंने सन 1910 में कोलकाता के नेशनल मेडिकल कॉलेज में डाक्टरी की

पढ़ाई के लिए दाखिला लिया ताकि बंगाल के क्रांतिकारियों से संपर्क स्थापित हो और वैसा ही कार्य विदर्भ में भी कर सके। वहां पुलिनबिहारी दास के नेतृत्व में 'अनुशीलन समिति' नाम की क्रांतिकारियों की एक टोली काम कर रही थी। इस समिति के साथ केशवराव गहरा संबंध जोड़कर बहुत मजबूती से जुड़ गए।

डॉ. हेडगेवार का क्रांतिकारी जीवन

माध्यमिक परीक्षा के बाद हेडगेवार जी का संपूर्ण समय क्रांतिकारियों के बीच ही बीतने लगा था। जब बंगाल से एक क्रांतिकारी माधवदास सन्यासी नागपुर आए तब केशव को ही उन्हें भूमिगत रखने की जिम्मेदारी सौंप गई थी। वह 6 महीने तक नागपुर एवं आसपास के क्षेत्र में रहकर बाद में जापान गए थे। अलीपुर बम केश में फंसे क्रांतिकारियों के बचाव के लिए भी मध्यप्रांत में धन संग्रह हुआ था और केशव पर नागपुर की जिम्मेदारी थी।

कलकत्ता देश के क्रांतिकारियों के लिए काशी के समान माना जाता था। केशव के मन में भी कलकत्ता जाकर क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़ने की अभिलाषा थी। उन पर सीण्आईण डीण एवं पुलिस की निरंतर निगरानी थी। अत: अध्ययन की आड़ में ही वह जाते, सौभाग्य से माध्यमिक परीक्षा में वह अपेक्षित अंक प्राप्त करके द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। पढ़ाई में उनकी रुचि विज्ञान के क्षेत्र में थी। माध्यमिक परीक्षा के बाद केशव ने एक प्राइवेट स्कूल में शिक्षक का काम करके धनोपार्जन अवश्य किया था परंतु कलकत्ता जैसे महंगे शहर में रहने के लिए इससे कहीं अधिक धन की आवश्यकता थी। उनकी निष्ठा एवं श्रेष्ठता ने प्रांत के तिलकवादी नेताओं का दिल जीत लिया था। वे सब उनके भविष्य के बारे में विचार मंथन में स्वत: ही लग गए थे। केशव ने बचपन में अब तक अपनी इच्छा, कठिनाई अथवा कष्ट के बारे में कभी किसी के आगे जिक्र भी नहीं किया था। डॉण मुंजे एवं उनके सहयोगी उनके इस स्वभाव से बहुत अच्छी तरह परिचित हो चुके थे। सबने मिलकर कलकत्ता में नेशनल मेडिकल कॉलेज में उनका नाम लिखवाने और वहां लॉज में रहकर अध्ययन एवं अपेक्षित क्रांतिकारी गतिविधियाँ करने की व्यवस्था की। रामलाल वाजपेयी ने अपने जीवन चरित्र में इस घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि उनको कलकत्ता भेजने का असली मकसद क्रांतिकारी संगठन संबंधी जानकारी प्राप्त करना एवं मध्यप्रांत और बंगाल के बीच सेतु का काम करना था। उन्होंने लिखा है कि श्री केशव हेडगेवार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक को श्री दाजी साहब बुटी की कुछ आर्थिक मदद दिलाकर शिक्षा की अपेक्षा पुलिन बिहारी दास के हाथ के नीचे क्रांति एवं संगठन के लिए भेजा गया था। उनके रहने की व्यवस्था कलकत्ता के प्रेम गुजराल मार्ग पर स्थित शांतिनिकेतन में की गई थी।

केशव निडर और साहसी थे तथा देश के लिए किसी भी प्रकार का त्याग करने के लिए तैयार थे। अपने लिए पैसा, सम्मान, ख्याति और आराम आदि किसी बात की इच्छा उनके मन में कभी पैदा नहीं हुई। उन्होंने सन 1910 में कोलकाता के नेशनल मेडिकल कॉलेज में डाक्टरी की पढ़ाई के लिए दाखिला लिया ताकि बंगाल के क्रांतिकारियों से संपर्क स्थापित हो और वैसा ही कार्य विदर्भ में भी कर सके।

नेशनल मेडिकल कॉलेज में देशभर से छात्र आते थे और इसका अखिल भारतीय चरित्र था। केशव के साथ अनेक मराठा छात्र वहां पढ़ने गए थे। नारायण राव सावरकर और आठवले आदि केशव जी के मित्रों में से थे।

डॉक्टर साहब जब कलकत्ता पहुंचे थे तो उस दौरान क्रांतिकारी पर अंग्रेजी दमन का दौर चल रहा था। हेडगेवार कलकत्ता पहुंचते ही अनुशीलन समिति से जुड़ गए। डॉ हेडगेवार ने जल्दी ही समिति में अपना विश्वसनीय स्थान बना लिया। उनका लॉज धीरे-धीरे क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र बन गया था। भूमिगत अवस्था में श्याम सुंदर चक्रवर्ती यहां यदा-कथा आया करते थे तो नलिनीकिशोर गुह सहित अनेक क्रांतिकारियों के ठहरने, छिपने, शस्त्रों को सुरक्षित रखने का स्थान भी बन गया था।

क्रांतिकारियों के बीच हेडगेवार का छद्म नाम 'कोकेन' था और वह शस्त्रों के लिए एनाटॉमी शब्द का प्रयोग करते थे। समिति की प्रतिज्ञा थी कि समिति के अंदर की बात को इसके सदस्य कभी भी किसी को प्रकट नहीं करेंगे। अति गोपनीयता ऐसे कामों का आधार होता था। अपने 5 वर्ष के

कलकत्ता प्रवास में डॉ हेडगेवार वहां के राष्ट्रवादी नेताओं एवं क्रांतिकारियों के बीच लोकप्रिय व्यक्ति के रूप में उभर कर सामने आए थे।

श्यामसुंदर चक्रवती का डॉक्टर साहब के प्रति अगाध प्रेम था। डॉक्टर हेडगेवार का उनके घर आना जाना अक्सर लगा रहता था। अन्य क्रांतिकारियों की तरह ही चक्रवर्ती जी की आर्थिक हालात दयनीय थे। उनकी पुत्री के विवाह में उत्पन्न आर्थिक संकट को दूर करने में हेडगेवार जी ने काफी तत्परता दिखाई थी। उन्होंने धन संग्रह करके उन्हें अर्पित किया था। हेडगेवार जी, मोतीलाल घोष, डॉ आशुतोष मुखर्जी जैसे लोगों के निकट रहे और रासबिहारी बोस तथा विपिनचंद्र पाल से भी उनका गहरा परिचय हुआ। डॉ हेडगेवार बंगाल एवं मध्यप्रांत की क्रांतिकारी गतिविधियों के बीच एक कड़ी का काम कर रहे थे। सन 1910 से 1915 के बीच बड़ी मात्रा में पिस्टल एवं अन्य शस्त्र बंगाल से मध्य प्रांत भेजे गए थे। हेडगेवार जी जब भी नागपुर आते थे तब अपने साथ छिपाकर शस्त्र लाया करते थे।

मध्यप्रांत की सरकार ने 1912 में इस तथ्य को स्वीकार किया कि नागपुर के आंदोलनकारी बंगाल के क्रांतिकारियों से जुड़े हुए हैं। हेडगेवार पर कड़ी निगरानी रखने के लिए गोपाल वासुदेव केतकर को मध्य प्रांत से कलकत्ता भेजा गया था, वह एक सरकारी जासूस था।

डॉक्टर साहब तनाव के कितने ही प्रसंगों पर अन्य का विरोध करने के लिए खुद को आगे कर देते थे। उनका कहना था कि जीवित समाज वही है जिसमें माताओं- बहनों और मानबिंदुओं की स्वाभाविक रूप से रक्षा होती है। समाज में ऐसी ही जीवंतता लाने के लिए संघ के कार्यकर्ता जुटे हुए हैं। हिंदू समाज जैसे-जैसे जागृत होकर स्वाभिमान के साथ खड़ा होगा वैसे-वैसे संघर्ष के अवसर अधिक आएंगे क्योंकि हिंदुओं की तेजस्विता देखने की अन्य लोगों को आदत नहीं है। अब तक तो उन्होंने संघर्ष के अवसरों पर डरपोक नेता और घर में घुसकर दरवाजे बंद कर लेने वाली जनता ही देखी थी किंतु अब चित्र बदल गया है। संघ के कार्यकर्ता समाज के जागरूक घटक के नाते उसका साहस जगाते हैं। यह उनके 'वीरव्रत' के अनुरूप ही है।

डॉक्टर साहब कोलकाता के मेडिकल कॉलेज में 5 वर्ष तक पढ़ाई पूरी करने के पश्चात डॉक्टर बन गए। इन पांच साल में जो कुछ भी किया उसे कभी-कभी बोला नहीं पर यह तो सर्वविदित है कि अलग-अलग क्षेत्र में काम करने वाले नेताओं का डॉक्टर साहब को स्नेह मिला। उनकी अलग-अलग क्रांतिकारियों से अलग-अलग स्थान पर दोस्ती बढ़ी और उन सभी के हथियारों को इधर से उधर चुपचाप पहुंचने में उन्होंने बहुत ही सावधानी संयम और योजना पूर्वक तरीके से काम किया। इस काम में उन्हें कभी प्रदेश और भाषा के रूप में कोई बाधा नहीं आई। बांग्ला भाषा उन्होंने अच्छी तरह से सीख ली थी और अनेक लोगों से दोस्ती भी कर ली थी। बाढ़ और महामारी जैसी विपदाओं के समय उन्होंने अपने युवा साथियों को साथ लेकर पीड़ितों की सेवा की। केशवराव जब डॉक्टरी की डिग्री लेकर नागपुर वापस आए तो उस समय देश पर प्रथम विश्व युद्ध का संकट मंडरा रहा था। उन्हें लगा कि यही ठीक समय है जब क्रांतिकारी आंदोलन का संगठन कर अंग्रेज सरकार को चुनौती दी जा सकती है उसके लिए अनेक खतरे उठाते हुए वे आंदोलन में भाग लेते रहे पर उन्हें यह बात जल्दी ही समझ आ गई कि भारत जैसे बड़े देश में हथियारों से क्रांति लाकर विदेशियों को जड़ से उखाड़ नहीं जा सकता। अत: जितनी सावधानी से उन्होंने इस कार्य को फैलाया था उतनी ही सावधानी से धीरे-धीरे समेट भी लिया। इस काम में कई साल लगे। यदि एक रास्ते से सफलता नहीं मिली तो वह उससे निराशा या हताश नहीं हुए, देशभक्ति और बिना किसी लालच के भाव से काम में लगे रहना तो उनका स्वभाव ही था।

सन 1915 से 1920 तक नागपुर में रहते हुए डॉक्टर साहब ने राष्ट्रीय आंदोलन में खूब काम किया। वह घूम-घूम कर खूब सभाएं और बैठके किया करते थे। किंतु युवाओं में पूर्ण स्वतंत्रता की आग धधकाने पर विशेष ध्यान देते थे। नागपुर में पुलिस ने डॉ हेडगेवार एवं डॉ मुंजे के घरों की दो बार तलाशी ली थी परंतु उन्हें कुछ भी हाथ नहीं लगा। इस प्रकार सरकार हेडगेवार के बारे में सब कुछ जानते हुए भी कुछ कर सकने में असमर्थ महसूस कर रही थी।

क्रांतिकारी आंदोलन में अपनी भूमिका के साथ-साथ डॉक्टर साहब ने बंगाल के दो जन आंदोलनों में भी सक्रिय रूप से भाग लिया था। सन 1911 में दिल्ली दरबार के बहिष्कार आंदोलन में वह शामिल हुए थे तो वहीं 1914 में सरकार द्वारा राष्ट्रीय मेडिकल कॉलेज की डिग्री न मानने के खिलाफ जबरदस्त जनमत तैयार करके आंदोलन भी उन्होंने चलाया था। ❐

अयोध्या धाम में श्रीराम मन्दिर

■ गंगा प्रसाद सुमन

22 जनवरी, 2024 को प्राण प्रतिष्ठा समारोह में जहां अयोध्या नगरी लाखों की आध्यात्मिक ऊर्जा का केन्द्र बनी, वहीं अब अपने नए अवतार में यह नगरी दिव्यता और विकास का पर्याय बन गई है। राम मंदिर संग वहां की प्राचीन धरोहरें और स्थल भी मन्दिर परिसर अध्यात्म और इतिहास का हिस्सा होगा। कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं–

- 732 मीटर लम्बा परकोटा सुरक्षा दीवार होगी, मंदिर नागर शैली में है।
- 70 एकड़ में बन रहा मंदिर का परिसर।
- 2.70 एकड़ में बन रहा है 3 मंजिल का राम मन्दिर
- 48 एकड़ का हरित क्षेत्र वाटिकाओं का नामकरण रामायण कालीन पत्रों के नाम पर।
- 21 से 22 एकड़ में मंदिर, कला, सुविधाओं केन्द्र सहित अन्य निर्माण।

- 13 मंदिर और बनेंगे राम लला के मुख्य द्वार के अलावा।
- 12 द्वार बने हैं। मुख्य मंदिर में प्रवेश पूर्व स्थित सिंह द्वार से मंदिर कॉम्पलेक्स में निर्माण श्रीराम कुंड, कर्म क्षेत्र, गुरू वशिष्ठ जी का, भक्ति टीका, प्रसाद मण्डप।
- मंदिर के चारों ओर परकोटे पर छह मंदिर बन रहे हैं। ऋषि मन्दिर में महर्षि वाल्मीकि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य ऋषि पत्नी अहिल्या के साथ निषादराज व माता शबरी के मंदिर स्थापित होंगे।
- मन्दिर की लम्बाई (पूर्व-पश्चिम) 380 फीट और चौड़ाई 250 फीट और ऊँचाई 161 फीट है।
- तीन मंजिला मन्दिर, प्रत्येक मंजिल की उंचाई 20 फीट कुल 392 खम्भे और 44 दरवाजे।
- भूतल गर्भगृह प्रभु श्रीराम के बाल रूप का विग्रह प्रथम तल गर्भगृह, श्रीराम दरबार।
- कुल पांच मण्डप-नृत्य मण्डप, ... (सभा), प्रार्थना मण्डप, कीर्तन मण्डप, रंग मण्डप।
- प्रवेश पूर्व से 32 सीढ़ियां (ऊंचाई 16.5 फीट) चढ़कर सिंह द्वार से होगा।
- परकोटा के चारों कोनों पर चार मंदिर भगवान सूर्य, शंकर, गणपति, देवी भगवती, परकोटे की दक्षिण भुजा में हनुमान एवं उत्तरी भुजा में अन्नपूर्णा माता का मंदिर।
- अयोध्या रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर उत्तर रेलवे ने अयोध्याधाम जंक्शन कर दिया है।
- देश-विदेश से अयोध्या को जोड़ा जा रहा है। महर्षि वाल्मीकि अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट। केन्द्र और राज्य सरकार ने 1463 करोड़ की लागत से अयोध्या एयरपोर्ट के पहले चरण की शुरुआत की है। अयोध्या नगरी सीधे दुनिया से जुड़ जाएगी। दो वर्ष की अवधि में केवल 178 एकड़ में फैली एक छोटी सी हवाई पट्टी अब 821 की एकड़ में फैले विशाल अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा होगी।
- अयोध्या में चार मुख्य पथ बनाए गए हैं-भक्ति पथ, रामजन्म भूमि पथ, राम पथ, और धर्म पथ। ये चारों वेदों और चार युगों की अवधारणा पर विकसित किए गए है। और ऊर्जा के उचित प्रयोग से ये चारों पथ वैश्विक मानकों पर खरे उतरते हैं।
- रामपथ सहादत गंज को लता मंगेशकर चौक से जोड़ता है। धर्म पथ लता मंगेशकर चौक से लखनऊ-गोरखपुर हाईवे तक।
- भक्ति पथ श्रृंगार हाट से हनुमान गढ़ी तक।
- अयोध्या के विकास की दिशा में 30 दिसम्बर, 2023 के दिन एक नए अध्याय की शुरुआत। इस दिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 15,700 करोड़ के बड़े प्रोजेक्ट प्रभु श्रीराम की नगरी को समर्पित किया। सबसे महत्वपूर्ण उपहार था महर्षि वाल्मीकि एयरपोर्ट का उद्घाटन। जय श्रीराम। श्रीरामनवमी की सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। ❐

कवयित्री सम्मेलन संपन्न

गत 22 मार्च को दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'गरिमा के स्वर : कवयित्री सम्मेलन' का आयोजन हिंदी भवन, नई दिल्ली में संपन्न हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता वरिष्ठ कवयित्री एवं सम्मेलन की अध्यक्ष श्रीमती इंदिरा मोहन ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में लोकसभा सांसद सुश्री बाँसुरी स्वराज की गरिमामय उपस्थिति रही। सान्निध्य डॉ. रत्नावली कौशिक, सह-मंत्री हिंदी भवन का प्राप्त हुआ। स्वागताध्यक्ष के रूप में समाजसेवी श्रीमती हेमलता अग्रवाल उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का प्रारंभ मंच पर उपस्थित अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर एवं माँ सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करने के साथ हुआ। इसी समय वरिष्ठ कवयित्री अंजु जैन द्वारा मधुर कंठ से सरस्वती आराधना प्रस्तुत की गई।

सम्मेलन के महामंत्री प्रो. हरीश अरोड़ा ने सम्मेलन के साहित्यिक अतीत की एवं विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'गरिमा के स्वर' स्मारिका का लोकार्पण मंचस्थ अतिथियों द्वारा एवं स्मारिका के संपादक एवं वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य अनमोल द्वारा किया गया। सांसद सुश्री बाँसुरी स्वराज ने कहा कि कवि सदा ही एक जागरूक और गंभीर चिंतक होते हैं। दूसरों की भावनाओं और समस्याओं को सहज रूप से प्रकट कर समाज को जाग्रत करते हैं। उन्होंने कहा कि नारियाँ भगवान की अनूठी कृति हैं, इसलिए इनको भगवान ने त्याग, तपस्या और प्रेम की मूर्ति बनाया है। श्रीमती हेमलता अग्रवाल ने सुंदर आयोजन के लिए सभी कवयित्रियों एवं संयोजकों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्रीमती इंदिरा मोहन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में बताया कि गत 44 वर्ष से दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिलाओं की सृजन क्षमता का आवाहन करता आ रहा है। हिंदी भाषा और साहित्य का यह कवितामय संवाद महिला गरिमा को तो प्रस्तुत करता ही है, समाज में सकारात्मक बदलाव को जाग्रत कर सनातन संस्कारों को भी पुष्ट करता आ रहा है।

डॉ. रत्नावली कौशिक ने कहा कि आज की महिलाएँ जिस प्रकार का योगदान समाज कल्याण के लिए कर रही हैं, वह विश्व के लिए एक उदाहरण है। इस काल में महिलाएँ पहले से ज्यादा सशक्त हो रही हैं। कवयित्री सम्मेलन का संचालन सम्मेलन की साहित्य मंत्री प्रो. रचना बिमल ने बड़ी कुशलता के साथ किया। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सरिता शर्मा को हिंदी भाषा की सेवा के लिए 'वागीश्वरी सम्मान' से सम्मानित किया गया। उन्हें सम्मान स्वरूप शॉल एवं प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिह्न भेंट किए गए। इस अवसर पर सम्मेलन कार्यालय के सहायक श्री नवीन झा को गत 38 वर्ष की निरंतर सेवा के लिए 'श्रीराम दरवार' प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आमंत्रित कवयित्रियों ने अपने सरस काव्य पाठ से सभागार में उपस्थित सभी श्रोताओं का मन मोह लिया। कवयित्रियों में सर्वप्रमुख डॉ. सरिता शर्मा, श्रीमती अंजु जैन, श्रीमती अलका सिन्हा, श्रीमती कल्पना शुक्ला, श्रीमती सुधा संजीवनी और श्रीमती उषा श्रीवास्तव 'उषाराज' सभी की कविताओं से पूरे सभागार में तालियों की गूँज सुनाई देती रही। कार्यक्रम के समापन पर सम्मेलन के पूर्व महामंत्री प्रो० रवि शर्मा 'मधुप' ने सभी आगंतुक अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। ❐

फर्श से अर्श तक की उड़ान

■ नीरु महाजन

यह भावभीनी सच्ची कहानी बिन माँ-बाप की दो बच्चियों की है, जो एक फुटपाथ पर अपनी माँ के साथ रह रही थीं। आज ये दोनों अमेरिका के एक डॉक्टर दम्पति की दत्तक पुत्रियां बन चुकी हैं। यह घटना राजस्थान के भरतपुर की है । एक साल पहले राधा और राधिका (बदले हुए नाम) ये दो बच्चियां एक फुटपाथ पर अपनी बीमार माँ के साथ पाई गई थीं। राहगीरों में से किसी व्यक्ति ने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए माँ-बेटियों को बाल कल्याण न्यायालय में प्रस्तुत किया। न्यायालय द्वारा इन बच्चियों को अपनी माँ के साथ भरतपुर के आश्रय गृह में भेजा गया। इन बच्चियों के पिता की कोई जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी।

स्वास्थ्य जाँच करने के बाद पता चला कि इन बच्चियों की माँ और बच्ची राधा (बदला हुआ नाम) क्षय रोग यानि टीबी से ग्रस्त है। किस्मत का खेल देखें इन बच्चियों की माँ की टीबी के कारण मौत हो गई। आश्रय गृह का निमय था कि इन बच्चों को बिना माँ के वहाँ नहीं रखा जा सकता था। इस कारण इन बच्चियों को दिल्ली लाया गया और एक अन्य गृह में रखा गया। इस आश्रय गृह द्वारा ऐसे सैकड़ों बच्चों, जो अपने माँ-बाप खो चुके हैं, अथवा किसी कारण दत्तक ग्रहण उनके माँ-बाप ने उनका परित्याग कर दिया है, का पालन-पोषण कर उनके नए आश्रय यानि इच्छुक दम्पतियों की दत्तक संतान बनाकर उन्हें नया जीवन दिया जाता है।

जो बच्ची टीबी से ग्रस्त थी केन्द्र की यशोदाओं द्वारा उसकी पूरी देखरेख हुई। चिकित्सकों द्वारा उसका पूरा इलाज हुआ और बच्ची जल्दी ही स्वस्थ हो गई। दोनों बच्चियों की अच्छी देखरेख हुई और इस बीच न्यायालय द्वारा उन्हें दत्तक ग्रहण के लिए आवश्यक निर्देश पारित किए गए। भारत सरकार के नियमानुसार भारतीय मूल के एक डॉक्टर दम्पत्ति द्वारा केन्द्रीय दत्तक ग्रहण संसाधन प्राधिकरण में आवेदन किया कि वे दो बहनों का दत्तक ग्रहण करना चाहते हैं। प्राधिकरण का यह नियम है कि यदि दोई दंपति दो बच्चों का दत्तक ग्रहण करना चाहता है, वह इस हेतु कागजी कार्रवाई आगे बढ़ा सकता है। प्राधिकरण द्वारा यह पाया गया कि वह परिवार दो बहनों का दत्तक ग्रहण कर सकता है और एक कानूनी प्रक्रिया द्वारा इन बच्चियों को अमेरिका के डॉक्टर दंपति द्वारा दत्त्क ग्रहण किया गया।

अब इन दोनों बच्च्यिों को विदेश में एक अच्छा समृद्ध जीवन मिल पाया। यह संभव हुआ, सेवा भारती, दिल्ली द्वारा बिन माँ-बाप के बच्चों के लिए संचालित आश्रय गृह मातृछाया के कारण। जो कि पिछले 22 वर्ष से कार्यरत है और करीब 350 बच्चों को गोद दे चुका है।

इस भावपूर्ण सत्य कथा के माध्यम से सेवा भारती संवदेनशील नागरिकों से अपील करना चाहती है कि वे इस पावन कार्य के लिए समय-मन-धन से भी सहयोग कर सकते हैं।

सेवा भारती (मातृछाया) मियांवाली नगर

सेवा का सौभाग्य

यदि जीवन में सेवा का सौभाग्य मिलता हो तो सेवा सभी की करना लेकिन आशा किसी से भी ना रखना, क्योंकि सेवा का वास्तविक मूल्य भगवान ही दे सकते हैं इंसान नहीं। जगत से अपेक्षा रखकर कोई सेवा की गई है तो वो एक ना एक दिन निराशा का कारण जरूर बनेगी। श्रेष्ठ तो यही है कि अपेक्षा रहित होकर सेवा की जाए। यदि सेवा का मूल्य ये दुनिया अदा कर दे, तो समझ जाना वो सेवा नहीं हो सकती। सेवा कोई वस्तु थोड़ी है जिसे खरीदा-बेचा जा सके। सेवा पुण्य कमाने का साधन है प्रसिद्धि कमाने का नहीं।

दुनिया की नजरों में सम्मानित होना बड़ी बात नहीं, गोविन्द की नजरों में सम्मानित होना बड़ी बात है। श्री सुदामा जी के जीवन की सेवा-समर्पण का इससे ज्यादा और श्रेष्ठ फल क्या होता, दुनिया जिन ठाकुर के लिए दौड़ती है वो उनके लिए दौड़े हैं। प्रभु के हाथों से एक ना एक दिन सेवा का फल अवश्य मिलेगा। ❐

हे माँ

■ विनोद श्रीवास्तव

सर्दियों के मौसम में एक बूढ़ी महिला अपने घर के कोने में ठंड से तड़फ रही थी। बेटा होते ही उसके पति का देहांत हो गया था। उस बेटे के उज्जवल भविष्य के लिए उस माँ ने घर-घर जाकर काम किया, काम करते-2 वो बहुत थक जाती थी, लेकिन फिर भी आराम नहीं करती थी। वह सोचती थी जिस दिन बेटा लायक हो जाएगा उस दिन आराम करूंगी। देखते-2 समय बीत गया! माँ बूढ़ी हो गयी और बेटे को अच्छी नौकरी मिल गयी। कुछ समय बाद बेटे की शादी कर दी और एक बच्चा हो गया। अब बूढ़ी माँ खुश थी कि बेटा लायक हो गया, लेकिन ये क्या बेटे व बहू के पास माँ से बात करने तक का वक्त नहीं होता था। बस ये फर्क पड़ा था माँ के जीवन में पहले वह बाहर के लोगों के बर्तन व कपड़े धोती थी।

अब अपने घर में बहू-बेटे के, फिर भी खुश थी क्योंकि औलाद उसकी थी। सर्दियों के मौसम में एक टूटी चारपाई पर, बिल्कुल बाहर वाले कमरे में एक फटे से कम्बल में सिमटकर माँ लेटी थी! और सोच रही थी कि आज बेटे को कहूँगी तेरी माँ को बहुत ठंड लगती है एक नया कम्बल ला दे। शाम को बेटा घर आया तो माँ ने बोला..बेटा मैं बहुत बूढ़ी हो गयी हूँ, शरीर में जान नहीं है, ठंड सहन नहीं होती, मुझे नया कम्बल ला दे। तो बेटा गुस्से में बोला, इस महीने घर के राशन में और बच्चे के एडमिशन में बहुत खर्चा हो गया! कुछ पैसे हैं, पर तुम्हारी बहू के लिए शॉल लाना है। वो बाहर जाती है।

तुम तो घर में रहती हो, सहन कर सकती हो। ये सर्दी निकाल लो, अगले साल ला दूंगा। बेटे की बात सुनकर माँ चुपचाप सिमटकर कम्बल में सो गयी। अगली सुबह देखा तो माँ इस दुनियां में नहीं रही। सब रिश्तेदार, पड़ोसी एकत्रित हुए, बेटे ने माँ की अंतिम यात्रा में कोई कमी नहीं छोड़ी थी। माँ की बहुत अच्छी अर्थी सजाई थी! बहुत महंगा शॉल माँ को ओढ़ाया था। सारी दुनिया अंतिम संस्कार देखकर कह रही थी- हमको भी हर जन्म में भगवान ऐसा ही बेटा मिले! मगर उन लोगों को क्या पता था कि मरने के बाद भी एक माँ तड़फ रही थी। सिर्फ एक कम्बल के लिए, सिर्फ एक कम्बल के लिए। ❐

(लेखक सेवा भारती दक्षिणी विभाग के मंत्री हैं)

महिला दिवस

■ भारती बंसल

प्रतिवर्ष 8 मार्च को महिला दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर एफ ब्लॉक पार्क में श्रीमती रेणू जी द्वारा दिया गया प्रेरणादायक उद्‌बोधन हम सभी के लिए अत्यन्त प्रेरणादायी रहा। उन्होंने अपने जन्म दिन जैसे विशेष दिन निवासियों से संवाद किया। सेवा भारती के महत्वपूर्ण कार्यो की जानकारी दी। सेवा भारती समाज के अन्तिम पयदान पर खड़े व्यक्ति को मुख्य धारा से जोड़ने के लिये निरन्तर प्रयासरत है। यह समाज के उत्थान के लिये विभिन्न स्तरों और माध्यमों से कार्य कर रही है उनहोंने महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये सेवा भारती द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों शिक्षा,

स्वास्थ्य, स्वावलम्बन और संस्कार के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने आग्रह किया कि आप सब इन प्रकल्पों से जुड़ें और समाज के सक्रिय निर्माण के लिये अपनी भागीदारी सुनिश्चित करायें। आपके बहुमूल्य समय और सक्रिय योगदान से ही एक सशक्त जागरूक और संगठित समाज का निर्माण सम्भव हो पाएगा। ❐

123 के चक्कर में स्वाधीन हुई देश की लाखों संपत्तियाँ

■ विनोद बंसल (राष्ट्रीय प्रवक्ता-विहिप)

30 मार्च को वर्ष प्रतिपदा और वित्तीय वर्ष 2025-26 का प्रारंभ होते ही देश की संसद ने एक ऐसा कानून पारित कर दिया जिसे यदि भारत की संपत्तियों का स्वाधीनता दिवस कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024 का उद्देश्य वक्फ अधिनियम, 1995 व 2013 में संशोधन कर वक्फ संपत्तियों के विनियमन और प्रबंधन में आने वाली समस्याओं और चुनौतियों का समाधान कर वक्फ संपत्तियों के प्रशासन और प्रबंधन में सुधार लाना है। अब ये विधेयक संसद के दोनों सदनों ने पारित कर दिया है। इस कानून में संशोधन की जड़ में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा देश की संपत्तियों को कट्टरपंथी जमात के अवैध कब्जे से रोकने के प्रति उसके 30 वर्ष की सतत साधना का भी एक महत्वपूर्ण योगदान है। यह साधना क्या है और कैसे 123 की मुक्ति का यह अभियान देश की करोड़ों संपत्तियों को स्वाधीन कर गया, यह जानना जरूरी है।

एक शताब्दी पूर्व सरकार द्वारा अधिगृहित सम्पत्तियों का भू स्वामी, स्वयं सरकार द्वारा ही, क्षणभर में बदल दिया जाएगा, कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। तत्कालीन यूपीए नीत केन्द्र सरकार ने सोचा कि 100 वर्ष से ज्यादा पुराना विवाद रविवार दिनांक 3 मार्च 2014 को जल्दी में बुलाई गई केन्द्रीय मंत्रिमण्डल की बैठक के माध्यम से सुलझा लिया जाएगा। इसी दिन दिल्ली के अति-महत्त्वपूर्ण स्थानों पर स्थित 123 भू-सम्पत्तियों को दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) व सरकार के लैण्ड एण्ड डेवलपमेंट ऑफ़िस (एलएनडीओ) के कब्जे से छुड़ा कर दिल्ली वक्फ़ बोर्ड को सौंपा दिया गया था।

महत्वपूर्ण बात यह है कि इस संबन्ध में जो सरकारी अधिसूचना या गजट नोटीफ़िकेशन 5 मार्च 2014 को ठीक उसी दिन जारी हुआ जिस दिन चुनाव आयोग ने देश की सोलहवीं लोक सभा के चुनावों की घोषणा की। इनमें से कई सम्पत्तियाँ तो अति सुरक्षा वाले उप राष्ट्रपति भवन के साथ-साथ राजधानी के बेहद संवेदनशील क्षेत्रों में भी हैं। इन सभी सम्पत्तियों के सम्बन्ध में गत 40 वर्षों से अधिक समय से विविध न्यायालयों में वाद भी चल रहे थे। किन्तु, वोटों की विसात् आखिर क्या-क्या गुल खिलाती है, किसी से कुछ छुपा नहीं है!

मामले में थोड़ा और पीछे चलते हैं। बात वर्ष 1970 की है जब अचानक दिल्ली वक्फ़ बोर्ड ने एक तरफ़ा निर्णय लेते हुए इन सभी सम्पत्तियों को एक नोटिफ़िकेशन जारी कर वक्फ़ संपत्तियाँ घोषित कर दिया। भारत सरकार ने इस मामले में तुरन्त हस्तक्षेप करते हुए इस निर्णय के विरुद्ध बोर्ड को प्रत्येक सम्पत्ति के लिए नोटिस जारी कर इन्हें वक्फ़ सम्पत्ति मानने से इन्कार कर दिया। इतना ही नहीं, सरकार ने बोर्ड के विरुद्ध न्यायालय का दरवाजा भी खटखटाया और सभी 123 संपत्तियों के लिए 123 वाद न्यायालय में दायर किए। मसला यह था कि ये सभी संपत्तियाँ तत्कालीन भारत सरकार ने आजादी से पूर्व वर्ष 1911 से 1915 के दौरान उस समय अधिगृहित की थीं जब अंग्रेजों ने दिल्ली को पहली बार अपनी राजधानी बनाने का निर्णय किया था। बाद में इनमें से 62 को डीडीए को दे दिया था। अधिकांश संपत्तियाँ दिल्ली के कनॉट प्लेस, मथुरा रोड, लोधी कॉलोनी, मान सिंह रोड, पण्डारा रोड, अशोक रोड, जनपथ, संसद मार्ग, करोल बाग, सदर बाज़ार, दरिया गंज व जंग पुरा जैसे वीवीआईपी क्षेत्रों में स्थित हैं जिनका मूल्य व महत्त्व आसानी से समझा जा सकता है, जो आज अरबों-खरबों मे है।

वर्ष 1974 में भारत सरकार ने एक हाई पावर कमेटी का गठन कर इन सम्पत्तियों से जुडे मामले का अध्ययन कर उसे रिपोर्ट देने का निर्णय लिया। किन्तु, जिन महाशय को सरकार ने इस कमेटी का अध्यक्ष बनाया वे, श्री एस एम एच वनी, पहले से ही वक्फ़ बोर्ड के अध्यक्ष थे। चोर को ही थानेदार बना कर कमेटी की निष्पक्षता पर पहले ही दिन से प्रश्न चिह्न लग गया। रिपोर्ट में इन्होंने स्वयं लिखा कि इस कमेटी को दो सम्पत्तियों में तो घुसने तक नहीं दिया गया जिनमें से एक उप-राष्ट्रपति भवन और दूसरी देश के अति संवेदनशील वायरलेस स्टेशन के अन्दर थी। किन्तु, इस

सब के बावजूद भी जैसा कि पूर्व निर्धारित था, कमेटी ने इन सभी सम्पत्तियों को वक्फ़ सम्पत्तियाँ घोषित कर दिया। इसके बाद औपचारिकता पूरी करते हुए इंदिरा गांधी जी की तत्कालीन केंद्र सरकार ने उस वर्ष के आम चुनावों से ठीक पूर्व दिनांक 27.03.1984 को जारी ऑफ़िस आदेश संख्या J.20011/4/74.1-II के माध्यम से इन सभी संपत्तियों को एक रुपए प्रति एकड प्रति वर्ष के पट्टे पर वक्फ़ बोर्ड को देने का निर्णय कर लिया।

विहिप ने देखा कि मुस्लिम तुष्टीकरण में आकंठ डूबी केंद्र सरकार मजहबी कट्टरपंथियों के समक्ष कैसे आत्म समर्पण कर चुकी है और राजनैतिक दल इस पर अपनी चुप्पी साधे बैठे हैं। तब उसने जून 1984 में जनहित याचिका संख्या WP(C) 1512/1984 के माध्यम से दिल्ली उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय ने न सिर्फ़ सरकारी आदेश पर रोक संबन्धी स्थगन आदेश पारित किया बल्कि सरकार से बारम्बार पूछा कि क्या सरकार की कोई ऐसी नीति भी है कि वह किसी मजहब विशेष को अपनी मजहबी मान्यताओं की पूर्ति हेतु कोई संपत्ति पट्टे पर दे सके। किन्तु, सरकार के पास ऐसी कोई नीति नहीं थी। इसलिए कोई संतोषजनक जवाब भी नहीं आया।

दिनांक 26.08.2010 को भारत के तत्कालीन अतिरिक्त महाधिवक्ता श्री पराग पी त्रिपाठी न्यायालय के समक्ष उपस्थित हुए और कहा कि सरकार चार सप्ताह के अन्दर इस संबन्ध में कोई नीतिगत निर्णय ले कर सूचित करेगी। किन्तु, चार सप्ताह की बात तो दूर, पूरा वर्ष 2010 बीत जाने पर भी जब सरकार नहीं लौटी तो सत्ताईस वर्षो की कानूनी लडाई लडने के बाद 12.01.2011 को माननीय उच्च न्यायालय ने विहिप दिल्ली की याचिका का निस्तारण यह कहकर कर दिया गया कि "भारत सरकार इस मसले पर पुनर्विचार कर छः मास के अन्दर निर्णय ले और तब तक न्यायालय का स्थगन आदेश जारी रहेगा"।

जिस मसले के समाधान के लिए माननीय उच्च न्यायालय बार-बार कह-कह कर थक गया, किन्तु सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंगी, चुनावी डंके की चोट कानों में पडते देख आनन-फ़ानन में यूपीए-2 की मनमोहन सिंह जी की सरकार की अन्तिम केबिनेट बैठक में एक बार फ़िर से इस सभी 123 सम्पत्तियों को वक्फ़ बोर्ड को देने का प्रस्ताव पारित कर दिया गया। इतना ही नहीं, इस अफ़रा-तफ़री में सरकार शायद यह भूल गई कि इस संबन्ध में भारत राजपत्र संख्या 566 व कार्यालय आदेश संख्या 661(E) ठीक उसी दिन (यानि 5 मार्च 2014) जारी कर दिया गया, जिस दिन आम चुनावों की घोषणा भारत के चुनाव आयोग ने की थी।

तत्कालीन मनमोहन सिंह सरकार ने पहले तो 1995 के वक्फ कानून में, वर्ष 2013 में खतरनाक संशोधन किए और फिर उसी की ढाल बना कर सौ वर्ष से अधिक पुरानी सम्पत्तियों को चुनावी वोट बैंक की भेंट चढा दिया था। किन्तु, विहिप यहाँ भी कहाँ हार मानने वाली थी! वह इस निर्णय के विरुद्ध सरकार द्वारा मॉडल कोड ऑफ कन्डक्ट के गंभीर उल्लंघन की शिकायत लेकर चुनाव आयोग पहुँच गयी। यहाँ चुनाव आयोग ने सरकार का वह आदेश निरस्त कर केंद्र सरकार को कड़ी फटकार लगाई।

चुनावों में सत्ताधारी दल करारी हार के बाद, जनता की गाढ़ी कमाई से अर्जित संपत्तियों को यूँ फ्री में मुस्लिम वक्फ बोर्ड को दिए जाने के विरुद्ध, इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद एक बार फिर उच्च न्यायालय की शरण में पहुंची और केंद्र में सत्ता परिवर्तन के बाद माननीय न्यायाधीश ने मामले को नई सरकार के समक्ष रखने का आदेश जारी कर दिया। उसके बाद विहिप का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मण्डल केंद्र सरकार से मिला जिसके बाद सरकार ने सभी संपत्तियों का सर्वे कराकर सभी संबंधित पक्षकारों को बुलाया और इन संपत्तियों का कब्जा अपने हाथ ले लिया।

जब यह 123 संपत्तियों का विवाद और उससे जुड़ी मुस्लिम तुष्टीकरण की सरकारी नीति को विहिप जनता के बीच ले गई तो जनता को भी लगा कि कहीं कहीं हमारी व्यक्तिगत, सामाजिक व धार्मिक संपत्तियों को भी तो वक्फ बोर्ड हड़प रहा है। इसके बाद देश भर में वक्फ के नाम पर हो रही अंधेरगदी और विधिक भू स्वामियों के अनवरत उत्पीड़न के समाचारों की बाढ़ सी आ गई। पीड़ित पक्षकार जागने लगे और उन्हें भी लगा कि शायद हमारी संपत्तियाँ भी वक्फ बोर्ड के अनधिकृत कब्जे से मुक्त हो जाएं! किन्तु वक्फ अधिनियम में 2013 के संशोधन उनकी राह के रोड़े थे। बात चाहे तमिलनाडु के थिरुचेंथुरई गांव के एक किसान जमीन की हो या बिहार के गोविंदपुर गांव में बिहार सुन्नी वक्फ बोर्ड द्वारा पूरे एक गांव पर दावे की हो, केरल के एर्नाकुलम जिले के लगभग 600 ईसाई परिवारों की अपनी

पुश्तैनी जमीन की हो या कर्नाटक के विजयपुरा में 15,000 एकड़ जमीन को वक्फ भूमि के रूप में नामित किए जाना हो और या फिर हजारों सरकारी संपत्तियों को वक्फ घोषित करने के बात हो, देशभर में वक्फ बोर्ड एक ऐसा भस्मासुर बन चुका था जो किसी भी संपत्ति पर हाथ रख देता था वह उसी पल उसकी हो जाती थी। किन्तु, पीड़ित पक्षकार उसके विरुद्ध न्यायालय का दरवाजा तक नहीं खटखटा सकता था। पुलिस शासन व प्रशासन सब निस्सहाय थे। 1995 तथा 2013 के वक्फ संशोधनों के माध्यम से उसे इतने असीमित अधिकार दे दिए गए थे जो अभी भारत के प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति के पास भी नहीं हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की तो हजारों संपत्तियों को तो इसने पहले से ही घेरा हुआ है। और तो और, महाकुंभ के पावन अवसर पर प्रयागराज में त्रिवेणी के पावन तट, संसद भवन, इंदिरागांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा जैसे देश के अनेक आस्था विश्वास व गौरव के केंद्र, स्मारक व प्रमुख स्थानों को भी कट्टरपंथी उलेमा व मौलवी अपनी वक्फ संपत्ति बताने लगे थे। विहिप ने इन सबके विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद कर सरकारों को चेताया।

ऐसे में वक्फ अधिनियम में संशोधन कर यदि बोर्ड में दो महिलाओं, मुस्लिम वर्ग के वंचित समाज को, दो विशेषज्ञों को और क्षेत्र के जिलाधीश को शामिल कर दिया तो क्यों बवाल होने लगा! यदि किसी भी पक्षकार को न्यायालय जाने की अनुमति दे दी गई, जो अभी तक पीड़ित पक्षकार को नहीं थी, तो क्या यह संवैधानिक नहीं! यदि बोर्ड की संपत्तियों को कब्जे मुक्त कर उनका डिजिटल पंजीयन हो जाए तो क्या अच्छा नहीं! यदि वार्षिक अंकेक्षण हो और संपत्तियों की आय के लाभार्थी गरीब मुसलमान भी हो जाएं तो क्या ठीक नहीं! वक्फ यदि सही मुस्लिम व्यक्ति द्वारा, सही दस्तावेजों के आधार पर, सहमति से हो तो उसमें क्या गलत है! वक्फ प्रबंधन यदि कब्जा रहित, पारदर्शी व समाज कल्याणकारी हो जाए तो किसी को भला क्या संकट हो सकता है! फिर इस अधिनियम के पारित होने से पूर्व, जुलाई 2024 से अप्रैल 2025 तक 9 माह से अधिक देशव्यापी गंभीर बहस हुई जिसमें करोड़ों सामान्य देशवासियों, बुद्धिजीवियों, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक व विधिक कार्यों से जुड़े व्यक्तियों संगठनों व प्रतिनिधियों को संयुक्त संसदीय समिति ने प्रत्यक्ष, परोक्ष व डिजिटल रूप से न सिर्फ सुना अपितु व्यक्तिगत भेंट कर उनसे सुझाव लिए, जो कि शायद भारत के संसदीय इतिहास में एक अभूतपूर्व कदम है।

अब आशा की जानी चाहिए कि ये संशोधन देश के हर वर्ग के लिए कल्याणकारी साबित होंगे और इस बारे में झूठ फैलाकर देश में अशान्ति व अस्थिरता का वातावरण निर्माण करने वालों पर अंकुश लगेगा। वैसे इस बारे में माननीय गृह मंत्री के उस वक्तव्य को बार बार सुनना चाहिए कि "वक्फ़ कानून को मानोगे कैसे नहीं, कानून भारत सरकार का है, इसे मानना ही पड़ेगा।" ❐

एकता में बल

एक था किसान। उसके चार लड़के थे। पर उन लड़कों में मेल नहीं था। वे आपस में बराबर लड़ते-झगड़ते रहते थे। एक दिन किसान बहुत बीमार पड़ा। जब वह मृत्यु के निकट पहुँच गया, तब उसने अपने चारों लड़कों को बुलाया और मिल-जुलकर रहने की शिक्षा दी।

किन्तु लड़कों पर उसकी बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तब किसान ने लकड़ियों का गट्ठर मँगवाया और लड़कों को तोड़ने को कहा। किसी से वह गट्ठर न टूटा। फिर, लकड़ियाँ गट्ठर से अलग की गयीं।

किसान ने अपने सभी लड़कों को बारी-बारी से बुलाया और लकड़ियों को अलग-अलग तोड़ने को कहा। सबने आसानी से लकड़ियों को तोड़ दिया। अब लड़कों की आँखें खुलीं। तभी उन्होंने समझा कि आपस में मिल-जुलकर रहने में कितना बल है। ❐

समर्थ किशोरी, समग्र विकास

पिछले 45 वर्षो से सेवा भारती, स्वयंसेवी संस्था अगड़े-पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिये निरन्तर प्रयासरत है। अन्तिम पायदान पर बैठे बन्धुओं, महिलाओं और उनके बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा, मानसिक सतर में अनतर को निरन्तर प्रयास से समरस समाज की दिशा में लाने के लिये प्रयासरत है। कार्यकर्ता बन्धु और बहनें इसी चिनता में बस्ती-बस्ती जाकर अपने अनुभव उनसे साझा करती है। अनेक प्रकल्पों के माध्याम से शिक्षा, सिलाई, कम्प्यूटर, सौन्दर्य, मेंहदी सिखाकर स्वावलम्बी बनाने का और संसकारयुक्त बनाने का प्रयास जारी है। इसी दिशा में अभावग्रस्त समाज के किशोर व किशोरियों को हर क्षेत्र में सक्षम बनाने हेतु किशोर-किशोरी विकास प्रकल्प बहुत पहले से चल रहा है।

इस पहल के पीछे किशोरियों को सही मायने में आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने में मदद की जाए। बेटी की पहली सखी उसकी अपनी माँ होती है। बेटी की शादी के बाद उसकी अपनी बेटी। हम अभावग्रस्त बस्तियों में काम करते हैं। वहां माँ की व्यस्तता के कारण उनसे कुछ नहीं कह पाती। कार्य की अधिकता और बढ़ते परिवार की जिम्मेदारी।

बेटियां, गंगा -यमु की तरह पवित्र हैं उनके गुणों की निर्मलता को निखारने, उभारने के लिये विकास की आवश्यकता है। उनकी विशेषताओं को पहचान कर सबके सामने उभारना। कक्षा की शिक्षिका को चाहिये कि वह उनसे अच्छी प्रकार दोस्ती कर ले ताकि वह अपने अर्न्तमन की बात अपनी मार्गदर्शक को बता पायें। 10 से 18 वर्ष तक सेवितों का सभी प्रकार से बातचीत करके समझबूझ कर सूझबूत से सहारा बनकर आगे बढ़ाना है ।

अन्ना हजारे 10वीं पास थे। मिलिट्री में मोटर ड्राईवर थे। पुलिस गांव में आई, कारण वहां कच्ची शराब बनती थी। उन्होंने युवा लोगों से दोस्ती की और शराब की भट्ठी बन्द कराकर खेतीबाड़ी शुरू कराई। उस गांव को आदर्श गांव बना दिया। प्रयास करने से क्या कुछ नहीं बदल सकता है। इस गांव में न कोई चोरी, कभी अदालत नहीं जाते, खुद ही अपनी समस्या सुलझाते थे। लोग उन्हें भगवान स्वयप मानते थे। एक गांव का सुधार किया।

हमें किशोरियों का विकास भी ऐसे ही करना है। किशोरियों के समग्र विकास हेतु चलाए जाने वाले नियम :-

- शारीरिक परिवर्तनों और उनसे उत्पन्न समस्याओं एवं निदान की जानकारी
- खेल, व्यायाम, योगाभ्यास, ध्यान
- सही आहार, का ज्ञान
- कुछ सामान्य बीमारियों व घरेलू इलाज की जानकारी
- महिला का गरिमामय रूप बताना
- आत्म सुरक्षा एवं सुरक्षा के अन्य उपयोगी जानकारी
- मानसिक, गीत संगीत, स्वाध्याय, शिक्षा, नैतिक शिक्षा, समय नियोजन व सदुपयोग

किशोरी विकास की आवश्यकता कार्य विस्तार के लिये जरूरी है। उन्हें समाजोपयोगी सशक्त महिला बनाने क लिये आवश्यक गुण:-

- स्वस्थ, आत्म निर्भर, शिक्षित और विवेकशीलता
- संतुलित बैलेंस बनाकर चलें
- परिवार के सम्पूर्ण विकास में सहायक
- सामाजिक भूमिका निभाने वाली
- अपनी संस्कृति के बारे में जागरूकता
- आतमविश्वाी, व्यवहारकुशल
- मेहनती, लगनशील
- स्व महत्व को समझने वाली

किशोरियों तक पहुंचने के माध्यम :-

- व्याख्यान
- कार्यशाला
- कार्यशाला
- शिविर
- विभिन्न संचार माध्यमों से
- परामर्श केन्द्र
- सतत चलने वाले केन्द्र। ❒

155 किशोरी विकास केंद्रों का उद्घाटन

■ अंजू पांडे

सेवा भारती का अनूठा प्रयास एक दिन में 100 स्थानों पर किशोरी विकास केंद्र प्रारंभ। पूरी दिल्ली की अलग-अलग बस्तियों में यह केंद्र चलेंगे। रविवार दिनांक 30 मार्च 2025 दोपहर 3:00 बजे पूरी दिल्ली में किशोरी विकास के केंद्रों का उद्घाटन।

किशोरी विकास, समर्थ किशोरी, समग्र विकास। मनुष्य के जीवन का सबसे संवेदनशील पड़ाव उसकी किशोरावस्था ही होती है खासकर लड़कियों की, क्योंकि वो ना तो अपनी बात किसी से कह पाती हैं और ना ही उस अवस्था में इतनी समझ होती है कि स्वयं को संभाला जा सके।

किशोरावस्था में बच्चियों के अंदर बहुत से परिवर्तन होते हैं जिसके कारण उनके मन में भटकाव की स्थिति उत्पन्न होती है। किशोरियों के शारीरिक, मानसिक सामाजिक और बौद्धिक

1	जिले का नाम	केंद्र संख्या	किशोरियो की संख्या
2	करावल नगर	5	76
3	ब्रह्मपुरी	8	119
4	नंद नगरी जिला	8	152
5	रोहताश	4	92
6	शाहदरा	5	138
7	गांधीनगर	5	68
8	इंद्रप्रस्थ	5	95
9	मयूर विहार	5	104
10	लाजपत नगर	3	55
11	कालकाजी	6	110
12	बदरपुर	6	163
13	अम्बेडकर	5	60
14	मिहरावाली	6	90
15	बसंत	3	39
16	द्वारका	6	85
17	नांगलोई	3	38
18	उत्तम जिला	5	78
19	नाहरगढ़	0	0
20	जनक	5	98
21	तिलक	6	107
22	मोती नगर	6	82
23	सरस्वती विहार	6	155
24	रोहिणी	5	160
25	कंझावला	6	99
26	नरेला	5	69
27	बुराडी	7	150
28	मुखर्जी नगर	5	205
29	कमला नगर	5	145
30	करोल बाग	5	120
31	पटेल नगर	4	157
32	योग	153	3109

विकास हेतु इस प्रकल्प को चलाया जा रहा है। किशोरियों को स्वस्थ, शिक्षित, संतुलित, स्वावलंबी, आत्मविश्वासी, विवेकशील, जागरूक, आत्मनिर्भर, सुयोग्य नागरिक बनाना और अपनी सुरक्षा करने में सक्षम हो व स्वयं के महत्व को समझने वाली बन सकें।

शारीरिक विकास

इस प्रकल्प के माध्यम से किशोरियों को तरह तरह के

खेल खिलाना, अपनी दिनचर्या में योग प्राणायाम को शामिल करना, अपनी स्वच्छता का ध्यान रखना, अपने खान पान का ध्यान रखना, अपने अंदर हो रहे शारीरिक बदलाव को समझना, अपनी संस्कृति व संस्कारों को किसी कहानी के साथ बताना, सामान्य बीमारियों के घरेलू इलाज से स्वयं को स्वस्थ रखने तथा प्राथमिक सहायक चिकित्सा तथा आत्म सुरक्षा करने के बारे में भी बताया जाता है।

मानसिक विकास

इसी प्रकार से मानसिक विकास हेतु किशोरियों को किसी भी प्रकार का मानसिक अवसाद ना हो इसके लिए तनाव प्रबंधन, सकारात्मक सोच, स्व मूल्यांकन, जीवन मूल्यों का समावेश, विवेकशील चिंतन, भावनात्मक संतुलन तथा समय प्रबंधन जैसे विषयों के बारे में जानकारी दी जाती है।

सामाजिक विकास

किशोरिया समाज में रहकर अपने व्यक्तित्व को कैसे निखार सकती हैं इस हेतु किसी प्रभावी व्यक्तित्व के बारे में चर्चा करना, संवाद कौशल कैसा हो? उनके अंदर नेतृत्व करने की क्षमता कैसे विकसित हो, परिवार का महत्व क्या होता है? हमारे सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों का क्या महत्व है, समाज के साथ संबंध कैसे होने चाहिए तथा हमारा पर्यावरण संरक्षण कैसे अच्छा हो सकता है इन सभी विषयों पर किशोरियों के साथ स्वस्थ चर्चा की जाती है जिससे उनका सामाजिक विकास भी हो सके।

बौद्धिक विकास

एक किशोरी भविष्य की कुशल महिला बन सके इसके लिए उसका बौद्धिक स्तर अच्छा होना भी आवश्यक है, इसके लिए किशोरियों के बौद्धिक विकास हेतु उन्हें समाज में किसी भी विषय पर चर्चा करना, समस्याओं का समाधान कैसे हो सकता है तथा अपनी भूमिका राष्ट्र के प्रति कैसे और बढ़ सके।

सामाजिक विकास

सामाजिक कार्यों में उनकी क्या भूमिका होनी चाहिए और अपनी जिम्मेदारी को कैसे निभाना है? राष्ट्र हित का ध्यान रखते हुए अपने कार्यों को करना उनकी नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए ऐसी चर्चा किशोरियों के साथ की जाती है। किशोरियों की प्रतिभा का विकास करवाना जिससे कि वे समाज में अपने आप को स्थापित कर सकें, अपने और अपने परिवार के साथ बच्चियों के संबंध मधुर रहे, अपनी बात को किस तरह से कहना है यह सब उन बच्चियों को इस प्रकल्प के माध्यम से सिखाया जाता है।

इसके अलावा समय-समय पर कोई प्रतियोगिता करवाना उन्हें स्वावलंबी बनाने हेतु कुछ कौशल विकास का प्रशिक्षण देना आदि। यह सभी विषय भी इस प्रकल्प में रहते हैं। सेवा भारती द्वारा चलाया जा रहा यह प्रकल्प बस्ती आधारित है। प्रत्येक केन्द्र 2 घंटे के लिए साप्ताहिक चलता है। हमारा संकल्प प्रत्येक किशोरी सशक्त और समर्थ बने।

सेवा भारती ने संकल्प नव वर्ष की पावन बेला में पूरी दिल्ली में एक दिन, एक समय, 100 जगह पर किशोरी विकास के केंद्र प्रारंभ किए जाने की योजना बनी पर सभी ने पूरे उत्साह के साथ इस कार्य को शुरु किया और पूरी दिल्ली में कुल 155 केन्द्रों का उद्घाटन किया गया जिससे हजारों किशोरियां लाभान्वित होगी।

सेवाधाम की गतिविधियां

- सेवा भारती सेवाधाम विद्या मंदिर आवासीय विद्यालय मंडोली दिल्ली में छठी कक्षा हेतु प्रवेश परीक्षाओं का आयोजन 20 परीक्षा केंद्रों पर रहा।
- सेवाधाम में हिन्दू नववर्ष का कार्यक्रम मनाया गया। सर्वप्रथम सभी ने संघ के संस्थापक डॉ॰ केशवराव बलिराम हेडगेवार जी का स्मरण किया। इसके बाद एकल गीत, अवतरण एवं श्रीराम वचन जी (जिला कार्यवाह-नन्द नगरी) का बौद्धिक प्राप्त हुआ।
- सेवाधाम विद्या मंदिर आवासीय विद्यालय में वार्षिक परीक्षा परिणाम की घोषणा की गई। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री विमल कुमार सिंह, श्रीमती शिखा जिंदल, डॉ. निधि रस्तोगी, श्री गुलशन जग्गा, श्रीमती छाया बंसल, श्रीमती रेखा गर्ग, डॉ. एस.पी. सिंह, श्री ओंकारनाथ मिश्रा, श्री सुरेंद्र, श्री सुशील शर्मा, श्री सुरेंद्र बाफना इत्यादि अतिथियों ने मां सरस्वती एवं भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। विद्यालय के छात्रों ने सामूहिक गीत, एजुकेशनल थीम डांस, एजुकेशनल सॉन्ग, नुक्कड़ नाटक जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। विद्यालय के शिक्षक श्री प्रशांत शर्मा ने शैक्षणिक वार्षिक परीक्षा परिणाम की घोषणा की। श्री शिवराम सिंह जी ने संस्कृत ज्ञान परीक्षा एन.टी.एस.ई. परीक्षा परिणाम की घोषणा की। श्री अनुज कुमार शर्मा ने सदन व्यवस्था एवं आवास व्यवस्था में प्रथम आये छात्रों की घोषणा की। महाराणा प्रताप सदन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। छात्रों को पुरस्कार के रूप में वार्षिक परीक्षा परिणाम, शील्ड, बैग, स्मार्ट घड़ी, बोतल इत्यादि सामग्री एवं प्रमाणपत्र दिया गया। विद्यालय के प्रबंधक श्री ओंकार नाथ मिश्र द्वारा शिक्षक एवं कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन वंदे मातरम गीत से हुआ। संचालन विद्यालय के शिक्षक श्री अनिल कुमार पाण्डेय एवं विद्यालय छात्र भैया अनुराग ने किया।
- सेवाधाम में कक्षा 12वीं के छात्रों हेतु आशीर्वाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती, भारत माता एवं संत रविदास जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। अतिथियों का परिचय विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री विमल कुमार सिंह ने कराया। विद्यालय के छात्र भैया रूपेश ने संत रविदास जी की जीवनी के विषय में बताया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विद्यालय के छात्रों द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया। मुख्य वक्ता- डॉ. एस.पी. सिंह जी (सह प्रबंधक सेवा धाम विद्या मंदिर) ने कहा कि सेवाधाम से अध्ययन करने के पश्चात सभी छात्र राष्ट्रहित में अपने महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे। विद्यालय शिक्षक श्री राजीव, श्री लक्ष्मी नारायण, श्री रवि रंजन, श्री अनुज कुमार शर्मा, श्री अनिल कुमार पाण्डेय ने सभी छात्रों हेतु कहा कि सभी छात्र शिक्षा ग्रहण कर राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। विद्यालय के छात्रों ने अपने 7 साल का अनुभव रखा, जिसमें मुख्य रूप से अमित ध्यान, निकित प्रधान, मनोज कुमार, अखिलेश कुमार, लक्ष्यराज, भीम थापा, उदय प्रजापति, ऋषभ कुमार, संजय कुमार इत्यादि। कार्यक्रम की अध्यक्ष श्रीमती उषा सिंह नेगी ने छात्रों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी। 12वीं कक्षा के सभी छात्रों को अतिथियों, प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों द्वारा प्रतीक

चिन्ह, फोटो फ्रेम, एक-एक बैग भेंट स्वरूप दिया गया। श्रीमती रेखा गर्ग (सह प्रबंधिका सेवाधाम विद्या मंदिर) ने अतिथियों का धन्यवाद किया एवं छात्रों को कठिन परिश्रम कर बोर्ड की परीक्षा में अच्छे अंक लाने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम में विद्यालय के सभी छात्र ,शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन महाराणा प्रताप सदन के शिक्षक प्रमुख श्री अनिल कुमार पाण्डेय एवं विद्यालय के छात्र भैया अनुराग पाण्डेय, भैया वासुदेव ने किया। कार्यक्रम का समापन वन्देमातरम् गीत से हुआ।

- सेवाधाम में होलिका दहन एवं होली का कार्यक्रम बड़े ही धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर समाज की सज्जन शक्तियों का आना हुआ। रात्रि में होलिका दहन विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक श्री शिवराम सिंह एवं श्री अनिल कुमार पाण्डेय द्वारा किया गया। इस अवसर पर सभी छात्र शिक्षक, पर्यवेक्षक एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। भारत माता की जय, भक्त प्रहलाद की जय, हर हर महादेव के नारे से सम्पूर्ण गगन गूंज उठा। होली के दिन सभी ने मिलकर सेवाधाम के छात्रों के साथ होली मनाई। सेवा भारती के प्रांत उपाध्यक्ष श्री संजय गर्ग एवं महामंत्री श्री सुशील गुप्ता का सभी को आशीर्वाद प्राप्त हुआ। सभी लोगों ने एकख़्दूसरे को गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दीं। ❒

भव्य सामूहिक पग-फेरा कार्यक्रम

सेवा भारती दक्षिणी विभाग के सभी जिलों में इस वर्ष अभावग्रस्त गरीब परिवार की 49 कन्याओं का सामूहिक विवाह, वसंत पंचमी 2 फरवरी एवं फुलेरा दूज 1 मार्च को 4 विभिन्न स्थानों पर भव्य कार्यक्रमों के रूप में आयोजित हुआ। अगली कड़ी में बेटियों के पग-फेरे का कार्यक्रम रविवार, दिनांक 16 मार्च को प्रात: 10.30 बजे से स्थान, वृंदावन ग्रांड, होटल गोल्ड फिच के सामने, सूरजकुंड रोड, फरीदाबाद में सम्पन्न हुआ। उक्त कार्यक्रम में नव-विवाहित जोड़ों के परिवारों से दो-दो सम्बंधिओं सहित लगभग 300 लोग थे। हिंदु परम्परानुसार नवख़्जोड़ों को उपहारों की भेंट दी गई। सेवा भारती द्वारा संचालित सेवाकार्यों व पारिवारिक संबंधों की सूक्ष्मताओ को मंच से बताया गया। कार्यक्रम-स्थल बहुत सुन्दर था। विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन इत्यादि की व्यवस्था सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री राकेश गुप्ता जी के द्वारा प्रायोजित थी।

दिल्ली प्रांत की ओर से श्री निर्भय जी व श्री प्रकाश जी विभाग के पूर्व अध्यक्ष श्री खजान सिंह जी, विभाग की सरंक्षक श्रीमती प्रोमिला मित्तल जी, एवं पूर्व विभाग मंत्री श्री चुन्नी लाल मदान जी, वर्तमान अध्यक्ष श्री अनंगपाल जी, सहित विभाग-जिले-नगर के कार्यकर्ता व प्रमुख दानदाता व प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे। ❒

परीक्षा परिणाम घोषित

गत 29 मार्च को सेवा भारती केंद्र सुदामा पुरी जिला रोहतास नगर में बच्चों के परीक्षा परिणाम घोषित किए गए। गवेंद्र पाल जी, माननीय राजेंद्र जी, श्रीमती अरुणा जी ने बच्चों का उत्साह बढ़ाया। प्रथम पुरस्कार नव्या ने, द्वितीय पुरस्कार इल्मा और तृतीय पुरस्कार आयात सैफी ने प्राप्त किया और बाकी बच्चों को उपहार दिए गए।

कलंदर कॉलोनी में सहभोज

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में 21 मार्च 2025, दिन शुक्रवार को केंद्र में पढ़ने वाली बालिकाओं एवं शिक्षिकाओं का सहभोज का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पहली पाली जो कि दोपहर 01.30 बजे से प्रारम्भ हुआ, में कम्प्यूटर, सिलाई, आर्ट एवं क्राफ्ट तथा कोचिंग की छात्राओं ने भाग लिया। पहले से नियोजित कार्यक्रम के अनुसार सभी सहभागी रोटी, चावल एवं सोयाबीन-आलू की सब्जी अपने अपने घर से ही बना कर लाये हुए थे तथा सभी ने साथ मिलकर केंद्र में भोजन ग्रहण किया। भोजन वितरण के उपरांत उपस्थित सभी सहभागियों ने भोजन मंत्र के साथ सहभोज का कार्यक्रम किया। दूसरी पाली में प्राथमिक कक्षा की छात्राओं (बाल-बाड़ी एवं बालिका संस्कार कक्षा) ने भोजन ग्रहण किया। इस प्रकार सहभोज के कार्यक्रम में कुल 50 बालिकाओं एवं शिक्षिकाओं ने भाग लिया।

यमुना विहार विभाग में कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग

गत 22 और 23 मार्च को यमुना विहार विभाग में कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग आयोजित हुआ। वर्ग की दिनचर्या में 7 सत्र और एक घंटे की शाखा सम्मिलित थी। प्रशिक्षण वर्ग में निम्न लिखित विषयों का प्रशिक्षण कार्यकर्ताओं को प्राप्त हुआ - सक्षम जिला और संगठन की रीति नीति, दायित्व बोध और नागरिक कर्तव्य, आगामी कार्यक्रम और अनुभव, आर्थिक बजट और वार्षिक योजना, कार्य विस्तार और मेरी भूमिका एवं आदर्श केंद्र, महिला कार्य और महिला समिति की भूमिका, खेल प्रशिक्षण।

वर्ग में कुल संख्या 49 की रही। इनमें 17 बहन और 32 भाई रहे। 19 नगरों में से 5 नगरों की उपस्थिति रही। प्रशिक्षण वर्ग में बस्ती का चयन कार्य विस्तार हेतु कैसे करें? एवं कार्य विस्तार के चरण क्या - क्या हैं? और आदर्श केंद्र का मापदंड क्या हैण्? इन विषयों पर जिला अनुसार गट बनाकर विस्तार से बिंदु तैयार किए और सभी का प्रशिक्षण किया गया। कार्यकर्ताओं को सेवा भारती का लोगो (सवहव) लगा हुआ एक बैग,लेखन हेतु एक पैड और एक पेन दिया गया। अगला कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग 6 माह उपरांत अक्टूबर में लगाने की योजना है।

-**प्रतिभा भटनागर**, सह मंत्री

होली मंगल मिलन

टीन्स फॉर सेवा

23 मार्च को टीन्स फॉर सेवा ने अपना होली मिलन का कार्यक्रम श्री राम मंदिर, रघुवीर नगर में मनाया। इसमें भारती कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रिंसिपल डॉक्टर सलोनी गुप्ता जी मुख्य अतिथि रहीं। डॉ निधि गुप्ता जी अतिथि रहीं। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम और चित्रकला प्रतियोगिता में भी अलग-अलग विभाग से आए बच्चों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि डॉक्टर सलोनी और अतिथि डॉक्टर निधि जी ने प्रथम, द्वीतिय स्थान प्राप्त विजेताओं को पुरस्कार भी दिए। कार्यक्रम में 150 के करीब संख्या रही। इस कार्यक्रम में सेवाधाम कक्षा 11वीं के बच्चों ने भी एक प्रस्तुति देकर तृतीय स्थान प्राप्त किया। गोपालधाम के बच्चों ने भी दोनों प्रतियोगिता में भाग लिया। डॉक्टर सलोनी ने सेवा भारती और टीन्स फॉर सेवा के द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। बच्चों का मार्गदर्शन करते हुए उन्होंने बताया कि अनुशासित जीवन से ही जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है और पढ़ाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी छात्रों को भाग लेना चाहिए। जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके। इस कार्यक्रम में टीन्स फार सेवा के पुराने वॉलिंटियर्स और अतिरिक्त नए वॉलिंटियर्स ने भी भाग लिया। सेवा भारती केंद्र के अन्य प्रकल्प के बच्चों ने भी इसमें भाग लिया।

स्ट्रीट चिल्ड्रन, कलंदर कॉलोनी

गत 12 मार्च को सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में होली मिलन का कार्यक्रम बड़े धूम-धाम से मनाया गया। इसमें प्रकल्प कार्यकारिणी के सभी सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रकल्प प्रमुख श्री ज्ञान प्रकाश गुप्ता जी के उद्बोधन से हुआ। उसके बाद श्री योगेंद्र पाल सलोटा जी के द्वारा बच्चों को होली पर्व के इतिहास एवं इससे जुड़ी कथाओं के बारे में बताया गया। श्रीमती सुषमा गुप्ता जी के द्वारा भी बच्चों को होली के विषय में कुछ ऐतिहासिक तथ्यों एवं कथाओं से अवगत कराया गया। उसके उपरांत सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं कार्यकारिणी के सदस्यों ने आपस में गुलाल लगाकर होली का त्योहार मनाया। इस कार्यक्रम में श्री दामोदरन जी (जिला अध्यक्ष सेवा भारती, नंदनगरी), श्री राजनारायण जी (संगठन मंत्री, नंदनगरी जिला) आदि का भी सानिध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में कुल 75 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम के पश्चात् उपस्थित सभी लोगों को गुजिया का प्रसाद एवं एक-एक गुलाल का पैकेट दिया गया और इसके बाद उपस्थित सभी लोगों ने पूड़ी, सब्जी एवं हलवे का प्रसाद ग्रहण किया। तत्पश्चात दोपहर को 01.30 बजे से भगवान श्री सत्यनारायण जी का पूजन एवं कथा श्रवण विधिवत

दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। श्री दामोदरन जी एवं श्री राज नारायण जी के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित किया गया। पूजन के उपरांत बस्ती की भजन मंडली के द्वारा भजन कीर्तन का गायन हुआ। सभी महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भजन कीर्तन में भाग लिया। भजन कीर्तन के पश्चात उपस्थित सभी लोगों को गुजिया का प्रसाद वितरित किया गया। उसके बाद उपस्थित सभी महिलाओं एवं बालिकाओं ने पूड़ी-सब्जी एवं हलवे का प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम में लगभग 130 महिलाओं एवं बालिकाओं ने भाग लिया। उसके बाद शाम को केंद्र में पढ़ने वाले बच्चों ने साथ मिलकर होली का त्योहार अति उत्साह और उल्लास के साथ मनाया। शाम को बच्चों को भी गुजिया का प्रसाद वितरित किया गया।

प्रांत कार्यालय

भारत वर्ष एक उत्सव प्रधान देश है। यहां त्योहार भारतीय जीवन शैली का अटूट हिस्सा है, जहां अनेकता में एकता, अनेक प्रकार के रंगीन एवं विविध त्योहारों का आयोजन होता रहता है। होली इन प्रमुख त्योहारों में से एक है। इसे त्योहारों का राजा कहा जाता है। यह पर्व हर वर्ष सेवा भारती दिल्ली द्वारा संचालित प्रकल्पों में, विभाग स्तर, जिला स्तर एवं नगर स्तर पर बड़े ही धूम-धाम एवं उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी गोल मार्केट स्थित प्रांत कार्यालय में 9 मार्च 2025 को बहुत ही भव्यता के साथ होली मनाई गई। सजावट, रंगोली एवं सेल्फी प्वांट से लेकर बच्चों के उत्साह के लिए केन्द्र के बच्चों ने नृत्य संगीत प्रस्तुत किया। पारंपरिक तरीके से काफी संख्या में उपस्थित कार्यकर्ताओं ने गुगाल, अबीर लगाकर एक-दूसरे को शुभकामनाएं दीं। प्रात: 10 बजे ठंडाई एवं तरह-तरह व्यंजन से शुभारंभ होकर दोपहर सुरुचि-पूर्ण भोजनोपरांत यह सद्भावना पर्व सम्पन्न हुआ।

पश्चिमी विभाग

सेवा भारती उत्तम जिला (पश्चिमी विभाग) द्वारा 08 मार्च को होली मिलन समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में जिले के कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त महिला समिति एवं भजन मंडली की बहनों और शिक्षिकाओं का योगदान अभूतपूर्व रहा। भजन मंडली द्वारा होली के अनुरूप भजनों का उत्तम कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

शिक्षिकाओं ने अपनी-अपनी प्रतिभा का पूर्ण प्रदर्शन किया। कुछ ने चुटकुले सुनाए तो कुछ ने गीत संगीत द्वारा मन प्रफुल्लित कर दिया। होली मिलन के साथ साथ आज अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर भी चर्चा हुई। लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए। फूलों की होली में लोगों की प्रसन्नता देखते ही बनती थी। सेवा भारती का परिचय और आने वाले कार्यक्रमों की जानकारी भी दी गई। कार्यक्रम के अंत में सुस्वादु अल्पाहार सबने ग्रहण किया।

जनक जिला

जनक जिले में पांच बस्तियों में होली के कार्यक्रम हुए। सबसे बड़ा कार्यक्रम तिहाड़ गाँव में हुआ, जिसमें सभी बस्तियों के लोगों को बुलाया गया। यह कार्यक्रम बस्ती के लोगों द्वारा आयोजित किया गया। कार्यकर्ताओं का बहुत अच्छा सहयोग रहा। बस्तियों के बच्चों के रंगारंग कार्यक्रम और भजन मंडलियों द्वारा भजन कीर्तन किया गया। कार्यक्रम बहुत सुंदर रहा। संख्या 650 रही।

पूर्वी विभाग

पूर्वी विभाग में चारों जिलों में बड़े ही धूमधाम एवं उल्लासपूर्वक होली पर्व मनाया गया। कार्यकर्ताओं ने केंद्र के बच्चों के साथ होली खेली और व्यंजन का आनंद लिया।

मातृछाया, मियांवाली नगर

सेवा भारती द्वारा संचालित मातृछाया, मियांवाली नगर में कार्यकर्ताओं ने बड़े ही हर्षोल्लास के साथ होली का पर्व मनाया। सभी ने गुलाल लगाकर एक-दूसरे को शुभकामनाएं दीं।

मुखर्जी नगर जिला

होली पर्व मुखर्जी नगर जिले में बहुत ही सुन्दर ढंग से मनाया गया। सभी बहनों ने एक-दूसरे को गुलाल लगाया। फूलों से होली का आनंद लिया व भजन मंडली ने सुन्दर होली के भजन गाए। गुजिया, समोसा, ठंडी का आनंद लिया। सभी कार्यकर्ता उपस्थित रहे। यह कार्यक्रम बाला साहब देवरस केंद्र रविदास नगर में मनाया गया।

स्वयं को पहचानिये

इस पूरी दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति आपका भाग्य बदल सकता है। केवल एक व्यक्ति ही आपके हर प्रश्न का उत्तर और हर समस्या का समाधान निकाल सकता है और वो कोई दूसरा नहीं केवल और केवल आप हो। दूसरे आपको केवल सलाह दे सकते हैं, मार्ग दिखा सकते हैं पर उस पर चलना तो आपको स्वयं ही होगा। आप ही इस दुनिया के वो इकलौते व्यक्ति हैं जो अपना भाग्य बदलने की सामर्थ्य रखता है। आप ही इस दुनिया के वो एकमात्र व्यक्ति हैं जो अपने चेहरे पर मुस्कान ला सकते हैं और आप ही इस दुनिया के वो एकमात्र व्यक्ति हैं जो अपने जीवन को आनंदमय बना सकते हैं।

आपके अतरिक्त कोई और दूसरा नहीं जिसके पास आपकी प्रत्येक समस्या का समाधान हो। कभी आप उस व्यक्ति को खोज रहे हों जो हर प्रकार से आपको संभाल सके तो धीरे से उठकर दर्पण के सामने चले जाना आपको स्वत: अपने सभी प्रश्नों का उत्तर मिल जायेगा।

जलाशय निर्माण का फल

पूर्व काल में एक धनी पुरुष ने जलाशय का निर्माण कराया, जिसमें दस हजार स्वर्ण मुद्राएं खर्च हुई। धनी व्यक्ति ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर कर प्राणप्रण से चेष्टा से श्रद्धापूर्वक सभी प्राणियों के लिए जलाशय का निर्माण कराया था। कुछ काल पश्चात् वह निर्धन हो गया। उसके बाद एक धनी पुरुष उसके बनवाये हुए जलाशय का मूल्य देने के लिए उद्यत हुआ और बोला- मैं इस जलशाय के आपको दस हजार स्वर्ण मुद्राएं दूंगा। इसके खुदवाने का पुण्य तुम्हें मिल ही चुका है। मैं केवल मूल्य देकर इस जलशाय पर अधिकार जमाना चाहता हूं। यदि तुम्हें लाभ जान पड़े तो मेरा प्रस्ताव स्वीकार करो। धनी के ऐसा कहने पर जलाशय निर्माण कराने वाले व्यक्ति ने कहा कि --भाई इस जलाशय से मुझे दस हजार का पुण्य नित्य प्राप्त होता है। पुण्य वेत्ताओं ने जलाशय निर्माण का ऐसा पुण्य माना है। विश्वास नहीं हो तो धर्म के अनुसार इसका प्रशिक्षण कर लो।

धनी व्यक्ति ने ईर्ष्यापूर्वक कहा कि मैं पहले तुम्हें दस हजार स्वर्ण मुद्राएं देता हूं। इसके बाद पत्थर लाकर पानी में डालता हूं यदि पत्थर स्वाभाविक रूप से डूब जाएगा या फिर वह समय के अनुसार पानी के ऊपर आकर तैरने लगगा तो मेरा रुपया मारा जायेगा। नहीं तो इस जलशाय पर धर्म स्वरूप मेरा अधिकार होगा। जलाशय निर्माण कराने वाले ने बहुत अच्छा कह कर दस हजार स्वर्ण मुद्राएं ले ली और अपने घर को चल दिया। धनी ने कई गवाह बुलाकर उनके सामने उस महान् जलाशय में पत्थर डाल दिया। उसके इस कार्य को मनुष्यों, देवताओं व असुरों ने भी देखा। तब धर्म के साक्षी ने धर्म की तुला पर दस हजार स्वर्ण मुद्राएं और जल को तौला; किन्तु वे मुद्राएं जलाशय से होने वाले एक दिन के जल दान की तुलना में बराबर नहीं थी। अपने धन को व्यर्थ जाता देखकर धनी के हृदय में बड़ा दु:ख हुआ। ❐

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

विज्ञापन के लिए आग्रह

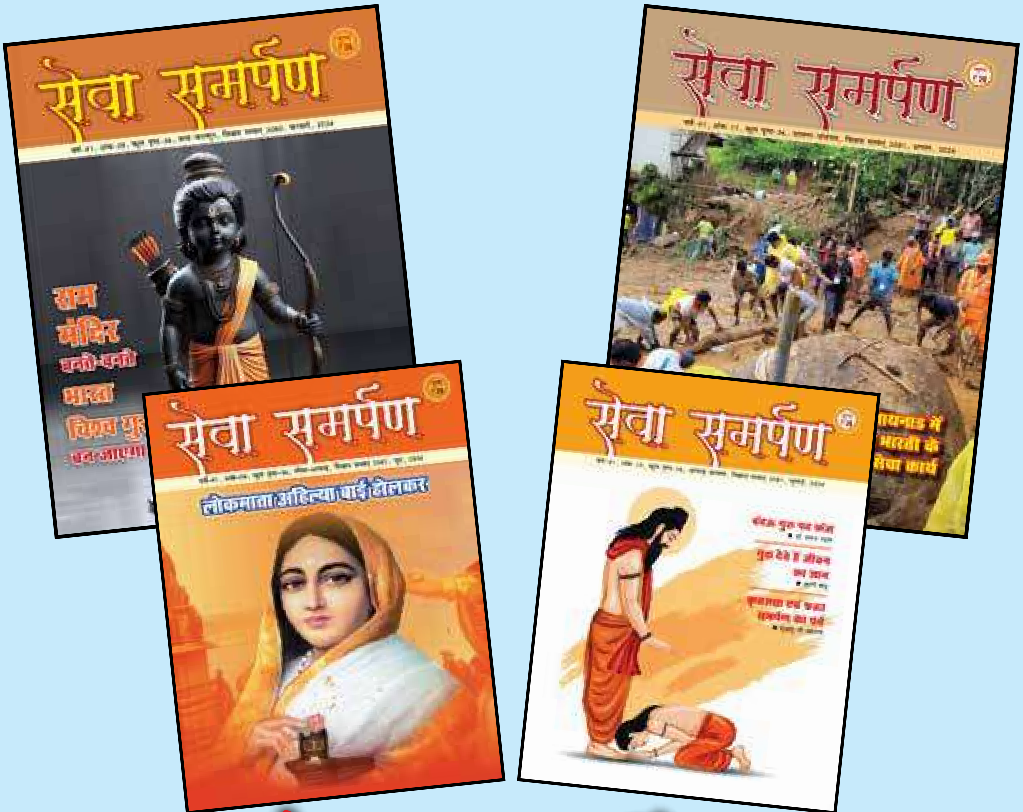

सेवा समर्पण

'सेवा समर्पण' पत्रिका समाज एवं संस्कृति के प्रति समर्पित, प्रतिष्ठित वर्ग, कार्यकर्ता एवं युवा वर्ग के बीच पिछले 41 वर्ष से 'नर सेवा-नारायण सेवा' के मूल मंत्र को लोकप्रिय बना रही है। इस पत्रिका द्वारा परिवार प्रबोधन, भारतीय जीवन शैली और संस्कारों से युक्त समसामयिक विषयों के साथ-साथ बच्चों, युवा वर्ग एवं महिलाओं संबंधी विषय सामग्री के द्वारा स्वावलम्बन, शिक्षा और संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाने का विशेष कार्य हो रहा है। समय-समय पर किसी एक बिन्दु को केन्द्रित कर विशेषांक निकालने की योजना रहती है। आपसे प्रार्थना है कि अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन प्रकाशित कराएं और 50 हजार पाठकों तक अपनी पहुंच बनाएं। यह पत्रिका सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, पुस्तकालय, व्यापारी वर्ग, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, अन्य गैर-सरकारी संगठनों, अस्पताल इत्यादि स्थानों पर जाती है।

संपर्क करें-

सेवा भारती, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

फोन - 011-23345014-15

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 10-11 अप्रैल, 2025, प्रकाशन तिथि-6-7 अप्रैल, 2025
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नंबर
DL(ND)-11/6188/2025-27

मुद्रक/संपादक/प्रकाशकः डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।